सिन्धु घाटी सभ्यता
(कांस्ययुगीन)

C^{14} → 2350 ई.पू. से 1750 ई.पू.

वर्तमान पाकिस्तान में स्थित स्थल

मोहनजोदड़ो
- "मुर्दों का टीला"
- राखालदास बनर्जी (1922)
- लरकाना जिला, सिंध प्रान्त (पाकिस्तान)
- सिंधु नदी के किनारे स्थित
- शवों को जलाया जाता था
- "सिंध का नखलिस्तान/बाग" की उपाधि
- विकसित जल निकासी प्रणाली

* विशाल अन्नागार (सैंधव सभ्यता की सबसे बड़ी इमारत)
* वृहत स्नानागार
* नर्तकी की कांस्य मूर्ति
* एक श्रृंगी पशुओं वाली मुद्राये
* पशुपति नाथ (शिव) मूर्ती के चारों ओर हाथी, गैंडा, चीता एवं भैंसा विद्यमान।
* ~~पुजारी का प्रस्तर मूर्ति~~

हड़प्पा
- दयाराम साहनी (1921)
- रावी नदी के तट पर
- सभ्यता का विस्तार त्रिभुजाकार
- नगर नियोजन आयताकार
- मुद्राओं पर एकश्रृंगी पशु का अंकन
- घरों का विन्यास ग्रीड पद्धति पर
- शवों को दफनाया जाता था
- हड़प्पाकालीन मुद्राये सेलखड़ी से निर्मित
- पूर्ण विकसित नगरीय सभ्यता
- घरों का निर्माण ईंटो से
- सर्वप्रथम कपास उत्पादन
- समाज — विद्वान, योद्धा, व्यापारी और श्रमिक में विभक्त
- सामाजिक पद्धति — उचित समतावादी

* लाल मृद भांड
* कांस्य गाड़ी
* गरुड़ चित्रित मुद्रा
* कांस्य दर्पण
* शंख का बैल
* मछुआरे का चित्र

* चांदी की उपलब्धता के प्राचीन साक्ष्य मिले
* मुहरों पर शेर का अंकन नहीं प्राप्त हुआ है।
* लोहे के प्रयोग के साक्ष्य नहीं।
* चांदी, टिन और सोने का आयात करते थे।
* पुजारी की प्रस्तर मूर्ति प्राप्त

चन्हूदड़ों
- गोपाल मजुमदार (1931)
- सिन्धु नदी
- मनके बनाने का कारखाना
- वक्राकार ईंटे
- तीन घड़ियालों तथा दो मछलियों के अंकन वाली मुद्रा
- सैंधव सभ्यता के 6 बड़े नगरों में शामिल

* बिल्ली तथा कुत्ते के पैरों के निशान
* कांस्य गाड़ी
* काजल, लिपिस्टिक, कंघा, पाउडर प्राप्त
*

सुत कांगेडोर
- बंदरगाह
- त्रिभुजाकार
- मकरान (पाकिस्तान) समुद्रतट पर
- आर.एल. स्टाइन (1927)
- दाश्क नदी के किनारे
- सिन्धु सभ्यता का सर्वाधिक पश्चिमी स्थल (बलूचिस्तान)

* घोड़े के अस्थिपंजर प्राप्त।
* तीन संस्कृतियों के साक्ष्य
* मानव अस्थि राख से भरा बर्तन
* बेबीलोन से व्यापार के साक्ष्य

#diwakarspecialclasses

Scanned by CamScanner

राजस्थान में स्थित

कालीबंगा
- हनुमानगढ़ जिले में
- घग्घर नदी के किनारे स्थित
- जुते हुए खेत के साक्ष्य
- लकड़ी की नाली
- भूकंप के साक्ष्य
- अलंकृत ईंटे
- अग्नि हवन कुंड
- चूड़ियां
- संभवत: एक साथ फसल बोने के साक्ष्य

उत्खननकर्ता
- → अमलानंद घोष (1953)
- → ब्रजवासी लाल (1960)

* निचला शहर किले से घिरा
* युग्म समाधियां प्राप्त

गुजरात में स्थित सैंधव कालीन नगर/स्थल

लोथल
- रंगनाथ राव (1957)
- अहमदाबाद
- भोगवा नदी के किनारे स्थित
- वृत्ताकार तथा चौकोर अग्निवेदिका
- चावल व बाजरे पर दोमुंहे राक्षस का अंकन
- घोड़े की मृण्मूर्ति
- गोदीवाड़ा → पोत निर्माण / नावों द्वारा समुद्री व्यापार
- तीन युग्मित समाधियाँ
- पूर्ण हाथी दांत
- लोमड़ी के चिन्ह
- अग्निकुंड
- सिन्धु सभ्यता-बंदरगाह नगर
- घोड़े का अस्थिपंजर
- चावल के दाने प्राप्त

रंगपुर
- माधव स्वरूप वत्स (1931)
- अहमदाबाद
- मादर नदी के किनारे स्थित
- कच्ची ईंट की नालियाँ एवं दुर्ग
- धान की भूसी
- ज्वार-बाजरे के साक्ष्य
- चावल के दाने, एवं धान की खेती के साक्ष्य

सुरकोटदा
- जगतपति जोशी (1964)
- कच्छ (गुजरात)
- प्राचीन सरस्वती नदी के किनारे स्थित
- घोड़े का अस्थिपंजर
- कलश शवाधान
- तराजू का पलड़ा

हरियाणा के स्थल

राखीगढ़ी
- सूरजभान (1969)
- हिसार (हरियाणा)
- घग्घर नदी के किनारे
- ताम्र उपकरण
- हड़प्पा लिपि युक्त मुद्री/मुद्रा

बनावली
- रवीन्द्र सिंह बिष्ट (1973)
- सरस्वती नदी के किनारे
- हिसार (हरियाणा)
- जौ।
- मिट्टी का हल (खिलौना)
- सड़कों पर बैलगाड़ी के पहियों का साक्ष्य

#diwakarspecialclasses

Scanned by CamScanner

#diwakarspecialclasses

पाकिस्तान में स्थित अन्य स्थल

कोटदीजी
- घुरये अफज अहमद खान (1935)
- सिंध (पाकिस्तान)
- सिंधु नदी के किनारे स्थित
- किलेबंदी का साक्ष्य नही
- कच्चे इटों के मकान व चूल्हे

सुत्काकोह
- जार्ज डेल्स (1962)
- पेरिन बलूचिस्तान
- शादी कौर नदी के किनारे
- छोटे टीले
- मृदभांड अवशेष

मांडा – जम्मू
- जगतपति जोशी (1982)
- चेनाब नदी के किनारे स्थित
- चर्ट, ब्लेड
- हड्डी को बाणाग्र
- अखनूर (J&K) में स्थित
- मुहरे
- सिन्धु सभ्यता का सबसे उत्तरी स्थल

आलमगीरपुर, मेरठ उ० प्र०
- यज्ञदत्त शर्मा (1958)
- हिंडन नदी के किनारे स्थित
- सिंधु सभ्यता का सबसे पूर्वी स्थल
- मृदभांडो पर मालगिलहरी की चित्रकारी

रोपड़, पंजाब
- यज्ञदत्त शर्मा (1955)
- रूपनगर (पंजाब) में स्थित
- सतलुज नदी के किनारे
- मानव के साथ कुत्ते दफनाने का साक्ष्य
- तांबे की कुल्हाड़ी

सिन्धु घाटी सभ्यता की विशेषताएं

- आद्य ऐतिहासिक कालीन
- → लिपि आद्य चित्रात्मक, अपठित, दाई से बाई ओर लिखी जाती थी।
- → पूर्ण विकसित नगरीय सभ्यता
- → घरो / नगरो का विन्यास ग्रीड पद्दति पर आधारित
- → प्रमुख फसलें – गेहूं, जौ।
- → मापन 16 की इकाई में

Scanned by CamScanner

* सभ्यता का विस्तार त्रिभुजाकार , नगर नियोजन आयताकार
* यातायात हेतु दो पहिया /चार पहिया बैलगाड़ी या भैंसागाड़ी
* मेसोपोटामिया के अभिलेखों में मेलूहा नाम से वर्णित
* शासन "वणिक वर्ग" द्वारा
* धरती को "उर्वरता की देवी"
* मातृदेवी की उपासना
* सूती एवं ऊनी वस्त्रों का प्रयोग
* आग में पकी मिट्टी → टेराकोटा
* सिन्धु सभ्यता का बन्दरगाह — लोथल

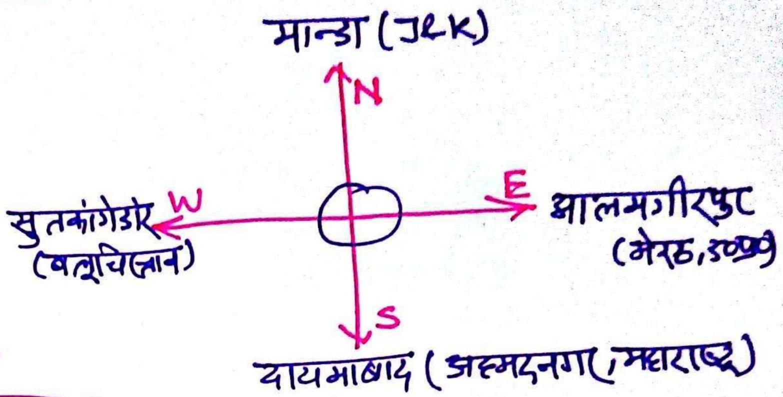

* लेखन शैली को वैज्ञानिक भाषा में "बाउस्ट्रोफेन्डम" लिपि कहते हैं।
* सर्वप्रथम कपास की खेती के प्रमाण, यूनान के निवासी कपास को "सिन्डन" कहते थे।
* चावल के साक्ष्य → (लोथल व रंगपुर) से।
* बाजरे की खेती → (सौराष्ट्र) * रोजदी (गुजरात) → (रागी की खेती)
* खेती हेतु हल का प्रयोग
* जानवरों के साक्ष्य → बैल, गाय, भैंस, बकरी, भेड़, सूअर, कूबड़ वाला सांड़, गधे, ऊट। कुत्ता, बिल्ली, हाथी, घोड़ा
* कांसे, तांबे, टिन आदि धातुओं के प्रमाण
* सिंधु लिपि को पढ़ने का सर्वप्रथम प्रयास → (एल० ए० वैडेल (1925))
* सिंधु लिपि के बारे में सर्वप्रथम (1873) में विचार व्यक्त करने वाले व्यक्ति (अलेक्जेंडर कनिंघम) थे।
* मृतकों का सिर उत्तर, पैर दक्षिण की ओर करके दफनाया जाता था।

#diwakarspecialclasses

Scanned by CamScanner

#diwakarspecialclasses

Scanned by CamScanner

भारतीय इतिहास के स्रोत

* 'इण्डस' - लैटिन शब्द
* "इण्डिया" → भारत देश को इण्डिया सर्वप्रथम हखामनी ईरानियों द्वारा दिया गया
* "सप्तसैन्धव" - नाम पारसियों के पवित्र ग्रन्थ "जिन्द अवेस्ता" में दिया गया।
  └→ सरस्वती की सात नदियों का स्रोत
* "इन्डोस" (→ यूनानी भाषा का शब्द) - यूनानियों द्वारा नाम दिया गया।
* "हप्त हिन्दु" - ईरानियों/पारसियनों की पुस्तक "मेहरेयास्त" और "यास्ना" में "सप्त सिन्धु" के स्थान पर "हप्त हिन्दु" शब्द का प्रयोग किया गया है।
* 'तिएन-चू', चुआंतू, "यिन-तू" ⇒ चीन वासियों द्वारा भारत के लिए प्रयुक्त शब्द है।

diwakar@specialclasses

* 'आर्य देश', 'ब्रह्मराष्ट्र' - इत्सिंग द्वारा प्रयुक्त शब्द।
* 'आर्यावर्त' - पतंजलि के समय में प्रयुक्त हुआ (150 BC)
* प्राचीन भारत का इतिहास लिखने का प्रथम प्रयास यूनानी लेखकों द्वारा किया गया।
  { हेरोडोटस, नियार्कस, मेगस्थनीज, प्लूटार्क, एरियन, स्ट्रेबो, प्लिनी, टालमी }
* अलबरूनी (→ यूनानी लेखक) द्वारा "तहकीक-ए-हिन्द" एवं "किताब-उल-हिन्द" में भारत का वस्तुपरक इतिहास लिखा गया है।
* ब्रिटिश इतिहासकार - विलियम जोन्स, मैक्समूलर, मोनियर विलियम्स, जे.एस. मिल, एफ.डब्लू हीगल, विन्सेट आर्थर स्मिथ,
* मैक्समूलर द्वारा "सेक्रेड बुक्स आफ द ईस्ट" में वेदों का अनुवाद किया गया है।
* जेम्स मिल ने बिना भारत आये ही, 6 खण्डों में भारत का इतिहास लिखा उसने भारतीय इतिहास को 3 भागों/कालो में विभक्त किया।

Scanned by CamScanner

* (B.A. Smith) ⇒ 1904 में "Early History of India" लिखी

* ("हिन्दू पालिटी") — के.पी. जायसवाल द्वारा 1924 में लिखी गयी।

* "Political History of Ancient India" – एच. सी. रायचौधरी

* "History and Culture of the Indian people" – आर.सी. मजूमदार

* A History of Ancient India / A History of South India } नीलकण्ठ शास्त्री

diwakar@specialclasses

* "Hindu Civilization" / "चन्द्रगुप्त मौर्य" / "अशोक" / "Fundamental unity of India" } (आर. के. मुकर्जी)

* "हिस्ट्री आफ धर्मशास्त्र" – (पी. वी. काणे)

* भारत के मार्क्सवादी इतिहासकार ⇒ डी. डी. कौशाम्बी, डी. आर. चानना, आर. एस. शर्मा, रोमिला थापर, इरफान हबीब, विपिन चन्द्र, शतीसचन्द्र

* "Historica" ⇒ (हेरोडोटस)

* Periplus of the erithrian sea ⇒ अज्ञात यूनानी लेखक

* "भारत का भूगोल" ⇒ "टालमी"

* Natural Historica – (प्लिनी)

* "सी-यू-की" – ह्वेनसांग द्वारा लिखित भारत का यात्रा वृत्तांत

Scanned by CamScanner

* Apigraphy - (अभिलेखशास्त्र) - उत्कीर्ण लेखों का अध्ययन
* ("पुरालिपि" विद्या") - लिपियों के विकास का अध्ययन
* ('अग्रहार') - ब्राह्मणों को दान की जाने वाली करमुक्त भूमि
* (न्यूमिसमेटिक्स) (मुद्राशास्त्र) - सिक्कों का अध्ययन
* '(पंचमार्क' या 'आहत') - भारत के प्राचीनतम सिक्के (5वीं, 6वीं BC)

  चांदी एवं तांबे के सिक्के
  ठप्पा मारकर प्रतीक चिन्ह अंकित किये गये है।

* भारत में पहली बार लिखित स्वर्ण सिक्के - हिन्द-यवन (Indo-greek) शासकों द्वारा चलाये गये
* (कुषाणों) ने 124 ग्रेन के शुद्ध स्वर्ण सिक्के चलवाये थे।
* कुषाणों ने ही सर्वाधिक तांबे के सिक्के भी चलवाये।
* समुद्रगुप्त तथा कुमारगुप्त की मुद्राओं से "अश्वमेघ यज्ञ" की सूचना मिलती है।

diwakar@specialclasses

* सातवाहन राजा (यज्ञश्री सातकर्णी) के सिक्कों पर जलयान का चित्र मिलता है।

1500 BC से 600 BC का काल भारतीय इतिहास का अन्धकार युग कहा जाता है।

नवीन उत्खननों के आधार पर पता चला है कि काशी में 1500 BC से ही 'लोहे' का प्रयोग होने लगा था।

भारत में शैल चित्रकला की परम्परा 12 हजार वर्ष पुरानी है।

✓ "इतिहास विज्ञान है, न कम न ज्यादा" — 'ब्यूरी'

Scanned by CamScanner

प्रागैतिहासिक काल

⇒ भारतीय प्रागैतिहासिक को उद्घाटित करने का श्रेय डा० प्राइमरोज (अंग्रेज)
↓
1842 में कर्नाटक के रायचूर जिले के लिंगसुगुर स्थान से प्रागैतिहासिक औजारों की खोज

⇒ पाषाण कालीन बस्तियों के अन्वेषण की शुरुआत Geological Survey के अधिकारी (ब्रूस फ्रूट) ने की। (1863)

⇒ 1935 में डी०टेरा तथा पीटरसन द्वारा शिवालिक पहाड़ियों की तलहटी में पोतावर के पठारी भागों का व्यापक सर्वेक्षण किया।

⇒ सर मार्टीमर व्हीलर के प्रयासों से भारत के समग्र प्रागैतिहासिक सांस्कृतिक अनुक्रम का ज्ञान हुआ।

⇒ "Pre Historic India" (Book) — स्टुअर्ट पिग्गट (1950)

⇒ पुरापाषाण काल के किसी मानव का अस्थिपंजर (जीवाश्म) अभी तक भारत में प्राप्त नहीं हुआ है।

⇒ सबसे प्राचीन जीवाश्म (वानरों के) शिवालिक की पहाड़ियों से मिले हैं।
↓
"रामापिथिकस" (Pliocene युग)

⇒ सीधा चलने वाला सबसे पहला वानर अफ्रीका (मध्य) में पाया गया।
↓
"आस्ट्रेलियोपिथिकस"
↓ उपजाति
"आरम्भिक पुरापाषाणकालीन संस्कृति का नेता" ← जिन्जैनथ्रोपस (5 लाख वर्ष पूर्व) → औजार बनाती थी

⇒ एशिया से प्राप्त आदिमानव (जीवाश्म) → पिथिकैन्थ्रोपस इरेक्टस or होमो इरेक्टस or जावा मानव
↓
जावा से प्राप्त

⇒ चीन के पीकिंग गुफाओं से प्राप्त जीवाश्म
↓
पीकिंग मानव या सिनेन्थ्रोपस

diwakar@specialclasses

Scanned by CamScanner

⇒ जर्मनी में नियन्डर घाटी से प्राप्त आदिमानव का जीवाश्म
↓
नियन्डरथल मानव (मध्यपुरापाषाणकालीन)

⇒ चालीस हजार वर्ष पूर्व आधुनिक मानव → होमोसैपियन्स सैपियन्स का प्रादुर्भाव हुआ।
↓
उपजातियां
↓
क्रोमैगनन, ग्रिमाल्डी, चान्सलेड

⇒ हरबर्ट रिज़ले द्वारा 7 श्रेणियों में भारत के नृतत्वीय विभाजन किया गया।
↓
मंगोल, भारतीय आर्य, द्रविण, मंगोल-द्रविण, शक-द्रविड़, तुर्की-ईरानी

⇒ बी. एस. गुहा के नवीनतम मतानुसार भारत में 6 प्रमुख प्रजातियां तथा उनके 9 प्रकार हैं।
↓
1- नीग्रिटो → अब भारत में लुप्त → (कुछ अंश अण्डमान, ट्रावनकोर, असम, राजमहल पर्वत श्रृंखला में विद्यमान जनजाति में हैं)
2- प्रोटो आस्ट्रेलायड - मिश्रित रूप में
3- मंगोल
  - a- पेलियो मंगोलाइड
  - b- तिब्बती मंगोल → सिक्किम व भूटान में
  - मंगोल → दीर्घशिरस्क असम-म्यांमार सीमा पर
  - मंगोल → गोल सिर वाले म्यांमार या चटगांव में
4- मेडीटरेनियन
  - a- पेलियो मेडीटरनीयन → कन्नड़, तमिल, मलयालम
  - b- मेडीटेरेनियन
  - c- पूर्वी प्रकार → पंजाब, सिन्ध, प०उ०प्र०
  - यूरोपीय → पंजाब व ऊपरी गंगा घाटी
5- पाश्चात लघुशिरस्क
  - a- एलपिनाइड — काठियावाड़ क्षेत्र
  - b- डाइनेरिक — बंगाल
  - c- आर्मिनाइड — पारसी
6- नार्डिक — पश्चिमी भारत में।

⇒ पूर्वपुरापाषाण काल में मानव क्वार्ट्जाइट पत्थरों का प्रयोग करता था।

diwakar@specialclasses

Scanned by CamScanner

पुरापाषाणयुग की अवस्थायें

प्रागैतिहासिक (Prehistoric)

- पुरापाषाणकाल (Palaeolithic age) (25 लाख BC से 10 हजार BC)
- मध्यपाषाण काल (Mesolithic age) (8000 BC — 4000 BC)
- नव पाषाण काल (Neolithic age) (9000 BC — 1000 BC)

पुरापाषाणकाल:

- पूर्व पुरा पाषाण काल (Lower Palaeolithic age) (25 Lac BC — 9 Lac BC)
- मध्य पुरापाषाण काल (Middle Palaeolithic age) (9 Lakh BC — 40 हजार BC)
- उच्च पुरापाषाणकाल (Upper Palaeolithic) (40,000 BC – 10000 BC)

diwakar@specialclasses

1(i) पूर्व पुरापाषाण काल:
* कृषि का ज्ञान नही था।
* इस काल का मानव आखेटक और खाद्यसंग्राहक था।
* पशुपालन का प्रारंभ नही हुआ था।
* अग्नि का ज्ञान तो था परन्तु इसके उपयोग से मानव परिचित नही था।
* पाषाण निर्मित औजार बनाना इस काल की प्रमुख विशेषता थी।
* औजार मुख्यतः क्वार्टजाइट, बलुआ पत्थर, लैटेराइट एवं चेल्सीडनी से बने होते थे।

भीमबेटका की चित्रकारी: सर्वाधिक प्राचीन चित्रकारी
* 243 प्रागैतिहासिक शिलाश्रय
* प्रारम्भिक चित्रों में हरे एवं गहरे लाल रंगों का उपयोग

1(ii) मध्य पुरापाषाण काल:
* इस काल में तापमान में भारी गिरावट आयी थी।
* इसकाल को विशिष्ट पहचान देने वाले उच्च कोटि के औजार महाराष्ट्र के नेवासा के निकट चिरकी से प्राप्त हुए, अतः इस काल को नेवासाई चरण की संज्ञा भी दी जाती है।

Scanned by CamScanner

* मध्य पुरापाषाण काल में जैस्पर, चर्ट, फ्लिंट आदि के पत्थर प्रयुक्त होने लगे।
* प्रमुख औजार फलक, बेधनी, छेदनी और खुरचनी थे। फलकों की अधिकता के कारण इस काल को फलक संस्कृति की संज्ञा दी जाती है।

1(iii) उच्च पुरापाषाण काल * इस काल में आर्द्रता कम थी, तथा इस काल के अन्त में हिमयुग की समाप्ति के कारण तापमान अपेक्षाकृत गर्म हो गया था।

* इस काल में विश्वव्यापी संदर्भ में दो विलक्षणताएं थी :-
(1) नये चकमक उद्योग की स्थापना।
(2) आधुनिक मानव - होमो सैपिन्स का उदय।

diwakar@specialclasses

* इसकाल का प्रधान उपकरण ब्लेड था।
* अस्थि उपकरणों का भी बहुतायत में प्रयोग होने लगा।
* इस काल की भारत में उल्लेखनीय खोज - रोड़ी मलबे (ढोका चिनाई) से बना 85 cm व्यास वाला स्थूल आकार का गोलाकार चबूतरा जिसकी खोज इलाहाबाद और बर्कले विश्वविद्यालय के उत्खननकर्ताओं ने की।

(2) मध्य पाषाण काल: (8000 BC – 4000 BC)

* तापमान बढ़ने के साथ मौसम शुष्क और गर्म होने लगा।
* भारत में इस काल के विषय में जानकारी 1867 ई० में हुयी जब सी. एल. कार्लाइल ने विन्ध्य क्षेत्र से लघु पाषाण उपकरण खोज निकाले।
* इस काल के औजार छोटे पत्थरों से बने हुए थे।
* ज्यामितीय औजार – ब्लेड, क्रोड, नुकीले त्रिकोण, एवं नवचन्द्रकार प्रमुख ज्यामितीय औजार थे।
* भारत में मानव अस्थि पंजर मध्य पाषाण काल से ही सर्वप्रथम प्राप्त होने लगते हैं।

Scanned by CamScanner

प्रमुख स्थल: (पुरापाषाण कालीन)

राजस्थान: * पचपद्र नदी घाटी और सोजत इलाके से सूक्ष्म औजार

* यहां महत्वपूर्ण बस्ती तिलवारा पायी गयी।

* भीलवाड़ा जिले में कोठारी नदी के तट पर स्थित "बागौर" भारत का सबसे बड़ा मध्यपाषाणकालिक स्थल है। इसका उत्खनन 1968-70 तक वी.एन. मिश्र ने करवाया। पूरे स्थल से पशुओं की जली अस्थियाँ, कब्रे, मानव कंकाल, झोपड़ी, फर्शों के साक्ष्य आदि प्राप्त हुए हैं।

गुजरात: * यहां ताप्ती, नर्मदा, माही, साबरमती नदियों के आस-पास कई स्थल प्राप्त हुए हैं।

* जिनमें अकखज, बलसाना, हीरपुर, लंघनाज प्रमुख हैं।

* लंघनाज से 100 से अधिक ठोस रेत के टीले, सूक्ष्म पाषाण उपकरण, कब्रे और पशुओं की हड्डियां प्राप्त हुयी हैं। तथा 14 मानव कंकाल प्राप्त हुए हैं।

diwakar@specialclasses

उत्तर प्रदेश: * प्रतापगढ़ स्थित सराय नहर राय का उत्खनन कार्य जी.आर. शर्मा ने कराया। छोटी बस्ती के साक्ष्य, अनेक छोटी भट्ठियाँ, झोपड़ी का फर्श और कब्रे, नर कंकाल, सींग निर्मित उपकरण, प्राप्त हुए हैं।

* समाधि स्थल में शवों का सिर पश्चिम तथा पैर पूर्व की ओर है।

* प्रतापगढ़ के महदहा से स्तम्भगर्त, हड्डियों की कलात्मक वस्तुएं। बारहसिंगा, भैंस, हाथी, गैंडा, सुअर, कछुए और पक्षियों के अवशेष प्राप्त हुए हैं। यहां ऐसे शवाधान प्राप्त हुए हैं, जिसमें दो व्यक्तियों को एक साथ दफनाया गया है।

मध्य प्रदेश: * होशंगाबाद जिले में आदमगढ़ शैलाश्रय समूह में 25000 सूक्ष्म पाषाण औजार प्राप्त हुए।

* पंचमढ़ी के निकट दो शैलाश्रय मिले हैं जिनका नाम जम्बूद्वीप और डोरोथीद्वीप है।

Scanned by CamScanner

(क)

जीवन शैली : * शिकार पर निर्भर। अन्तिम चरण में मृदभाण्डों का निर्माण करना सीख गये। * अन्त्येष्टि संस्कार विधि के विषय में भी जानकारी मिलती है।

* मृतकों को समाधियों में गाड़ते थे, और साथ में खाद्य सामग्री और औजार रखते थे, जो कि लोकोत्तर जीवन में विश्वास का सूचक है।

* पत्थर की गुफाओं की दीवारों पर चित्रों और नक्काशियों से इस काल की सामाजिक जीवन और क्रियाकलापों की जानकारी प्राप्त होती है।

शैलचित्रों के प्रमुख स्थल :

* उ०प्र० के मुरहना पहाड़
* म०प्र० में भीम बेटका, आदमगढ़, लाखाजुआर
* कर्नाटक में कुपागल्लु

diwakar@specialclasses

(3) नवपाषाण काल :

⇒ नवपाषाण काल या Neolithilic शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 'सर जान लुबाक' ने 1865 में प्रकाशित पुस्तक "प्रीहिस्टारिक टाइम्स" में किया।

⇒ नवपाषाण काल की चार प्रमुख विशेषताएं

① - कृषि कार्य , ② - पशुपालन

③ - पत्थर के औजारों का घर्षण और उन पर पालिश करना

④ - मृद्भाण्ड बनाना

(अन्य विशेषताएं) ⇒ स्थाई निवास, वस्त्र निर्माण, अग्नि का उपयोग,

* इस काल के अन्त में धातुओं (सर्वप्रथम - तांबा) का प्रयोग प्रारम्भ, नृत्य गान एवं आखेट से मनोरंजन।

* सर्वप्रथम नील नदी घाटी में मिस्र में आसवान डैम के उत्तर में स्थित काडीकुब्बानियां से गेहूं और जौ के साक्ष्य मिले हैं।

Scanned by CamScanner

प्रागैतिहासिक का अर्थ → वह इतिहास जिसको पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर लिखा गया हो।

⇒ मानव को आग की जानकारी – निम्न पुरापाषाण काल में हुयी।

⇒ मानव ने आग का उपयोग सर्वप्रथम सीखा – नव पाषाण काल में।

⇒ 'पेबुल उपकरण' सम्बन्धित है :- निम्न पुरापाषाण काल से।

⇒ सोहन घाटी का सम्बन्ध है :- निम्न पुरापाषाण काल से।

⇒ बेलन घाटी से प्राप्त औजार – निम्न पुरा पाषाणकाल से सम्बन्धित है।

⇒ मानव की आखेटक और खाद्य-संग्राहक की अवस्था :- पुरापाषाण काल से जुड़ी है।

⇒ शल्कों से बने औजार सम्बन्धित है :- (मध्य पुरापाषाण) काल से।

⇒ भीमबेटका एक प्रागैतिहासिक स्थल है, जहां से चित्रकला के साक्ष्य प्राप्त हुए है।

diwakar@specialclasses

⇒ पशुपालन का प्रारम्भ (मध्य पाषाण काल) से माना जाता है।

⇒ भारत के दो सबसे पुराने मध्यपाषाणकालीन स्थल – सरायनाहरराय, महदहा

⇒ प्रारम्भिक स्तम्भ गर्त पाए गये है: सरायनाहर राय एवं महदहा से

⇒ मानव द्वारा पाला गया प्रथम पशु – (कुत्ता)

⇒ मानव द्वारा प्रयोग में लायी गयी पहली धातु – (तांबा)

⇒ मानव द्वारा उपयोग में लायी गयी पहली फसल – (गेहूं)

⇒ कृषि का प्रथम उदाहरण प्राप्त हुआ – (मेहरगढ़ (नवपाषाणकालीन)) से

⇒ कोल्डिहवा का सम्बन्ध है: चावल के प्राचीनतम साक्ष्य से

⇒ बुर्जहोम सम्बन्धित है :- (नवपाषाणकालीन) स्थल से

⇒ पूर्वी भारत का प्रमुख नवपाषाणकालीन स्थल है: – (चिरांद)

Scanned by CamScanner

⇒ कुम्भकारी प्रारम्भ हुयी - (नव पाषाण) काल से।

⇒ ताम्बवती के नाम से प्रसिद्ध है :- (अहार संस्कृति)

⇒ हड़प्पा की कनिष्ठ कालीन संस्कृति है :- (कयथा संस्कृति)

⇒ इनामगांव (ताम्रपाषाणयुगीन बस्ती) सम्बन्धित है :- (जोर्वे संस्कृति से)

⇒ ताम्रपाषाण संस्कृतियों में किस संस्कृति में पत्थर के औजार प्राप्त नही हुए ⇒ (अहार संस्कृति से)

⇒ दैमाबाद का सम्बन्ध है :- (ताम्र पाषाणकालीन) से

⇒ बड़ी संख्या में दफनाए गये बच्चो के शवाधान प्राप्त हुए :- (जोर्वे संस्कृति से।)

⇒ गिलुन्द स्थल का सम्बन्ध है :- (अहार संस्कृति) से।

⇒ ताम्रपाषाण मृदभांडों में उत्कृष्टतम मृदभांड है :- (मालवा मृदभांड)

⇒ आंध्रप्रदेश का उतनूर सम्बन्धित है :- नव पाषाण कालीन संस्कृति से।

diwakar@specialclasses

⇒ हल्लूर, पिकलीहल, संगनकल्लू, टी. नरसीपुर, तथा पैयम पल्ली ⇒ (नव पाषाण कालीन) स्थल है।

⇒ माइक्रोलिथिक औजार → (मध्य पाषाण काल) से सम्बन्धित है।

⇒ राजस्थान का बागौर और मध्यप्रदेश का आदमगढ़ सम्बन्धित है :- (मध्य पाषाण काल) से

⇒ सबसे कम अवस्था थी :- (मध्य पाषाणकाल) की।

⇒ आधुनिक मानव होमोसेपियन्स का प्रादुर्भाव हुआ : (उच्च पुरा पाषाणकाल) में।

⇒ क्वार्टजाइट पत्थरों के स्थान पर जैस्पर, चर्ट आदि के पत्थर सर्वप्रथम प्रयुक्त हुए :- (मध्य पुरा पाषाण) काल में।

⇒ हस्त कुठार, विदारणी और खण्डक (गड़ासा) उपकरण प्रयुक्त होते थे :- (निम्न पुरा पाषाण काल) में।

Scanned by CamScanner

⇒ अहार संस्कृति का प्रमुख क्षेत्र है ⇒ दक्षिण पूर्वी राजस्थान की (बनास घाटी)

⇒ नर्मदा घाटी में विकसित हुयी संस्कृति थी ⇒ (मालवा संस्कृति)

⇒ एरण, नगदा और नवदाटोली का सम्बन्ध है ⇒ (मालवा संस्कृति) से

⇒ भारत में दो संस्कृतियां एक साथ पायी गयी है :- (मध्य पाषाण काल) एवं (नव पाषाण काल)

⇒ भारत में जो (एकमात्र मानवाभ कपि) पाया जाता है, वह है :- "असम का श्वेतभ्रू गिब्बन

diwakar@specialclasses

⇒ प्राचीन भारतीय भौगोलिक मान्यता के अनुसार भारतवर्ष किस द्वीप खण्ड का भाग था :- (जम्बुद्वीप)

⇒ प्रागैतिहासिक कुल्हाड़ियां मिली है :- (अतिरंपक्कम) से।

⇒ पुरातात्विक स्थानों के पुरावशेष कालानुक्रम है :- कुरनूल गुफाएं < दमदमा < टेक्कलकोटा < नैकुंड

⇒ भारत के पूर्व प्रस्तर युग के अधिकांश औजार बने थे - (स्फटिक) के।

⇒ सुमेलित युग्म: बस्ती स्थल - (चिरांद)
समाधि स्थल - (पोरकालम)
बस्ती एवं समाधि स्थल - (पिक्लीहल)

⇒ सुमेलन:
चौपानी माण्डो ⇒ (मध्य पाषाण काल)
कुल्ली ⇒ (ताम्र पाषाण काल)
अतिरंपक्कम ⇒ (पुरा पाषाण काल)
इनामगांव ⇒ (पूर्व हड़प्पा कालीन)

⇒ दक्कन के "अश टीले" :- "नवपाषाण युग के मवेशी रखने वालों की बस्ती के अवशेष।

⇒ किस स्थल की खुदाई प्रस्तर युग से हड़प्पा संस्कृति तक निरन्तर ह्रास और सांस्कृतिक विकास का प्रमाण देते हैं :- (मेहरगढ़) (बलूचिस्तान, पाकिस्तान)

Scanned by CamScanner

⇒ सबसे पहले "मानव सदृश प्राणी" जो प्राज्ञ मानव (होमोसेपियन्स) से प्रजातीय रूप से भिन्न था, उसे सामान्यतया जाना जाता है:-
→ (पिथेकेन्थ्रोपस) के रूप में।

⇒ (ताम्र संचय) का सम्बन्ध है :- (गेरूवर्णी) मृद्भाण्ड से।

⇒ भारत में एक मात्र मानवकपि (रामापिथिकस) के जीवाश्म का प्रमाण मिला है:-
"(शिवालिक पहाड़ी से)।

⇒ ब्लेड से बने औजार प्रमुख विशेषता थे :- (उच्च पुरापाषाण) काल में।

⇒ पूर्व पुरापाषाण काल के कुछ औजार पाये गये हैं, जो
(16 आर और सिंगी तालाब में)
स्थित थे :- (राजस्थान) में।

⇒ शल्क निर्मित औजार प्रमुख रूप से पाये गये हैं :- (मध्य पुरापाषाण काल)

सुमेलित: स्थल ⟺ शैलचित्र

* उत्तर प्रदेश → मुरहाना पहाड़
* मध्यप्रदेश → लाखा जुआर
* मध्य प्रदेश → भीमबेटका
* कर्नाटक → कुपागल्लु

diwakar@specialclasses

⇒ भेड़, बकरियाँ आदि को रखे जाने का साक्ष्य प्राप्त हुआ :- (बागोर) से

⇒ गंगाघाटी में चावल के प्राचीनतम प्रमाण है :- चौथी सहस्राब्दी ई०पू०

⇒ कपास का प्राचीन साक्ष्य प्राप्त हुआ है :- (मेहरगढ़)

⇒ गणेश पूजा का साक्ष्य प्राप्त हुआ है :- (दैमाबाद) (महाराष्ट्र) से

Scanned by CamScanner

हड़प्पा सभ्यता

⇒ 1921 में दयाराम साहनी द्वारा खोज की गयी।

⇒ वर्तमान शोधो के आधार पर इसे 3500 ई०पू० की सभ्यता माना गया है।

⇒ भारतीय पुरातत्व एवं सर्वेक्षण विभाग का जन्मदाता - अलेक्जेन्डर कनिंघम

⇒ भारतीय पुरातत्व विभाग की नींव वायसराय लार्ड कर्जन के काल में पड़ी।

⇒ राखलदास बनर्जी ने 1922 में मोहनजोदड़ो की खोज की।

हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न नाम
- हड़प्पा सभ्यता
- सिन्धु घाटी सभ्यता
- सिन्धु सरस्वती सभ्यता
- कांस्य युगीन सभ्यता
- प्रथम नगरीय क्रान्ति

काल-निर्धारण: इस सभ्यता की लिपि पढ़ी ना जा सकने के कारण कालक्रम निर्धारण एक जटिल कार्य है।

① रेडियो कार्बन विधि — 3500 BC – 1300 BC
- पूर्व हड़प्पाई काल (3500 – 2600 BC)
- परिपक्व हड़प्पाई काल (2600 – 1900 BC)
- उत्तर हड़प्पाई काल (1900 – 1300 BC)

diwakar@specialclasses

② सर मार्टिमर व्हीलर → 2500 BC — 1500 BC

③ डी०पी० अग्रवाल → 2350 BC – 1750 BC

④ सरजॉन मार्शल → 3250 BC – 2750 BC

⑤ मैके → 2800 BC – 2500 BC

⑥ एम० एस० वत्स → 3500 BC – 2500 BC

⑦ डेल्स → 2900 BC – 1900 BC

सिन्धु सभ्यता की मानव प्रजातियां

(i) **प्रोटो आस्ट्रेलायड:** यह सिन्धु क्षेत्र में आने वाली प्रथम जनजाति थी। अभी भी SC/ST के रूप में भारत में विद्यमान है।

Scanned by CamScanner

(ii) भूमध्यसागरीय (मेडिटेरियन) :- * सिन्धु सभ्यता की निर्माता प्रजाति
* द० भारत में विद्यमान है।

(iii) मंगोलायड : उप हिमालयी क्षेत्रों,- असम, सिक्किम, भारत-म्यांमार सीमा, चटगांव का पहाड़ी क्षेत्र में पाये जाते हैं।

(iv) अल्पाइन : विशेषकर सिन्धु प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक एवं तमिलनाडु में।

उद्भव

- **विदेशी उद्भव का मत** :- * मेसोपोटामिया की सुमेरियन सभ्यता से हड़प्पा सभ्यता का विकास का मत।
  - समर्थक :- क्रेमर, गार्डन चाइल्ड, एच०डी० सॉकलिया
- **स्वदेशी उद्भव का मत** :
  - * सिन्धु सभ्यता का उद्भव ईरानी, बलूच और सिन्धु संस्कृतियों (आमरी, कोटदीजी) तथा भारत की स्थानीय संस्कृतियों से हुआ।
  - * समर्थक : फेयर सर्विस, अमलानन्द घोष (सोथी संस्कृति), डी०पी अग्रवाल और आल्चिन (दोनो ने सोथी संस्कृति को ही उद्भव का स्रोत माना)

diwakar@specialclasses

→ **प्राक् हड़प्पा स्थल** : "स्थल जो हड़प्पा सभ्यता के उद्भव से पूर्व से मौजूद थे।"

दक्षिणी अफगानिस्तान → मुंडीगाक, देह मोरासी घुंडई,

बलूचिस्तान (पाकिस्तान) - नाल, किले गुलमोहम्मद, दम्बसदात, पेरियानो घुंडई, अंजीरा, स्याहदम्ब, नून्दरा, कुल्ली, मेही, पीराकदम्ब, मेहरगढ़।

सिन्धप्रान्त - आमरी, कोटदीजी

पंजाब प्रांत (पाकिस्तान) : हड़प्पा, सरायखोला, जलीलपुर।

राजस्थान - कालीबंगा

हरियाणा - राखीगढ़ी, बनावली

→ **हड़प्पन स्थल** : अफगानिस्तान - मुण्डीगाक, शुर्तुगुई

पाकिस्तान
- → द० बलूचिस्तान - सुत्कागेण्डोर, सोत्काकोह, डाबरकोट, बालाकोट
- → सिन्ध प्रान्त - मोहनजोदड़ो, चन्हूदड़ो, जुडेरजोदड़ो, आमरी, कोटदीजी, अलीमुराद।
- → पंजाब प्रान्त - हड़प्पा, डेरा इस्माइलखान, जलीलपुर, रहमान ढेरी, गुमला

Scanned by CamScanner

भारत

- **जम्मू-कश्मीर** – माण्डा
- **पंजाब** – रोपण, कोटलानिहंग खान, चक-86 बाड़ा, संघोल, डेरमजरा
- **हरियाणा** – बनावली, मिताथल, सिसवल, बणावली, राखीगढ़ी, बालू,
- **राजस्थान** – कालीबंगा
- **उत्तर प्रदेश** – आलमगीरपुर (मेरठ), बड़ागाव एवं हुलास (सहारनपुर)
- **गुजरात**
  - **कच्छ की खाड़ी** → देशलपुर, सुरकोटदा, धौलावीरा।
  - **खम्भात की खाड़ी** → लोथल, रंगपुर, रोजदी, प्रभास, भगतराव, नागेश्वर, कुन्तासी, मेघम, शिकारपुर।
- **महाराष्ट्र** – दैमाबाद (अहमदनगर जिला, गोदावरी तट पर स्थित)

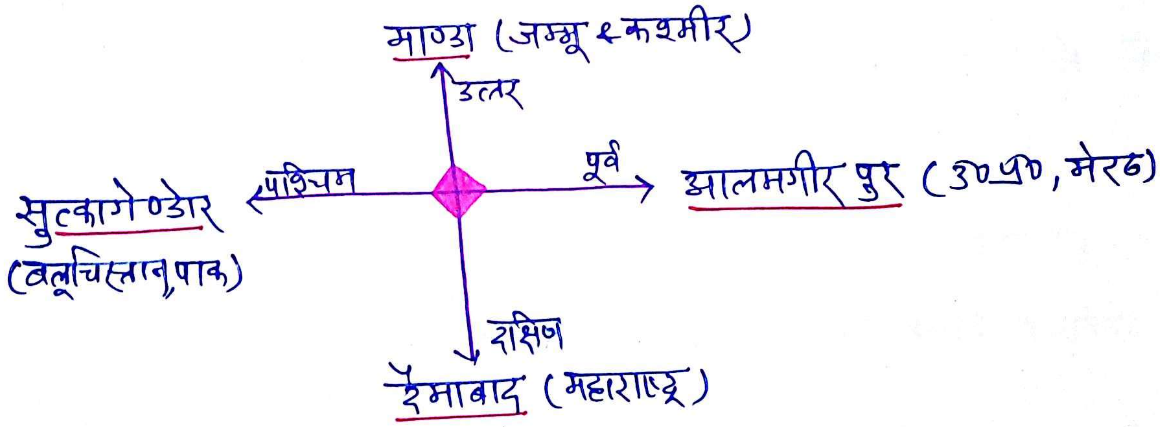

हड़प्पोत्तर स्थल: रोजदी एवं रंगपुर।

तीनों कालो के स्थल: सुरकोटदा, धौलावीरा, राखीगढ़ी, मांडा।

diwakar@specialclasses

महत्वपूर्ण तथ्य:

⇒ सिन्धु सभ्यता के अधिकांश निवासी भूमध्य सागरीय प्रजाति के थे।

⇒ सिन्धु सभ्यता के लोग लौह धातु से अपरिचित थे।

⇒ उत्खनन के आधार पर सैन्धव कालीन सभ्यता की तिथि 2500BC निर्धारित की गयी

⇒ सैंधव सभ्यता के लोग पशुपति की पूजा करते थे।

⇒ सिन्धु सभ्यता के पतन का प्रमुख कारण विनाशकारी बाढ़ था।

Scanned by CamScanner

⇒ सैन्धव सभ्यता एक नगरीय सभ्यता थी।

⇒ मोहनजोदड़ो का प्रमुख सार्वजनिक स्थल "स्नानागार" था।

⇒ सैन्धव सभ्यता "मातृ प्रधान" थी।

⇒ सैन्धव स्थल "लोथल" गुजरात में स्थित है।

⇒ मोहनजोदड़ो के उत्खनन से "आर॰डी॰ बनर्जी" सम्बन्धित हैं।

⇒ सैन्धव सभ्यता के व्यापारिक सम्बन्ध सुमेर, ईरान, बहरीन से थे।

⇒ स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात सबसे अधिक सैन्धव सभ्यता के स्थल "गुजरात" से खोजे गये।

⇒ मिस्र, सुमेर एवं मेसोपोटामिया की सभ्यताएं सैन्धव सभ्यता की समकालीन थी।

⇒ मार्टिमर व्हीलर ने मत दिया कि सैंधव सभ्यता का विनाश "आक्रमणकारी आर्यों" ने किया।

diwakar@specialclasses

⇒ सैन्धव सभ्यता मानव इतिहास के "आद्य ऐतिहासिक काल" से सम्बन्धित है।

⇒ प्रसिद्ध कांस्य नर्तकी की मूर्ति (मोहनजोदड़ो) से प्राप्त हुयी थी।

⇒ घोड़े के अवशेष "सुरकोटदा (कच्छ की खाड़ी) से प्राप्त हुए हैं।

⇒ सिन्धु सभ्यता के मुहरों पर गाय, ऊँट, घोड़ा आदि पशुओं का अंकन नही मिलता है।

⇒ चारागाही अर्थव्यवस्था सिन्धु सभ्यता की विशेषता नही थी।

⇒ मोहनजोदड़ो में आवास ईंटों से बने हुए थे।

⇒ सिन्धु घाटी की लिपि की सूचना मोहरों से प्राप्त होती है।

⇒ सिन्धु घाटी सभ्यता का सर्वाधिक उपयुक्त नाम हड़प्पा सभ्यता होना चाहिए।

⇒ कालीबंगा से जुते हुए खेत के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

⇒ सिन्धु लिपि को बाएं से दाएं पढ़ने और उसे तमिल भाषा में परिवर्तित करने वाले विद्वान "रेवरेण्ड हेरस" थे।

Scanned by CamScanner

⇒ सिन्धु व सुमेरियन सभ्यता अन्न भण्डार प्रणाली में समान थी।

⇒ "धर्म" वर्तमान भारतीय जीवन का वह क्षेत्र है जो आज भी सिन्धु सभ्यता से प्रेरणा ले रहा है।

⇒ युगल शवाधान के साक्ष्य लोथल से मिले हैं।

⇒ सैन्धव सभ्यता से सूती वस्त्र के उल्लेख मिले हैं।

⇒ लोथल जो सिन्धु सभ्यता का प्रमुख पत्तन नगर था, खम्भात की खाड़ी में स्थित था।

⇒ मोहनजोदड़ो की इमारतें नगर के सम्पूर्ण क्षेत्र में नियोजित ढंग से फैली थी।

⇒ प्रसिद्ध पशुपति मुहर मोहनजोदड़ो से प्राप्त हुयी है।

⇒ हड़प्पा में ईंटों के नाप का अनुपात (1 : 2 : 4) था।

⇒ सिन्धु सभ्यता से प्राप्त मुहरें स्टेटाइट की बनी थी।

⇒ कालीबंगा से अग्नि वेदिकाओं के प्रमाण मिले हैं।

⇒ माण्डा (जम्मू-कश्मीर) चिनाव नदी पर स्थित है।

⇒ मोहनजोदड़ो से सूती कपड़े का टुकड़ा प्राप्त हुआ था।

⇒ प्रारम्भिक हड़प्पा स्तरों से कालीबंगा में एक ही खेत में साथ-साथ दो फसलों के उगाने का साक्ष्य प्राप्त होता है।

⇒ भारत में मूर्तिपूजा का प्रारम्भ हड़प्पा काल से प्रारम्भ होता है।

⇒ कालीबंगन में दुर्ग तथा निचला नगर अलग-अलग प्राचीरों से घिरे हुए हैं।

diwakar@specialclasses

⇒ हड़प्पा, मोहनजोदड़ो तथा कालीबंगा में दुर्ग नगर के पश्चिम में स्थित है।

⇒ गुजरात के हड़प्पाकालीन पुरास्थलों से धान की खेती के प्रमाण मिले हैं।

⇒ सैन्धव व्यापारिक केन्द्रों से मेसोपोटामिया के साथ व्यापार ढिलमुन नामक मध्यस्थ बंदरगाह से होता था।

Scanned by CamScanner

⇒ चार्ल्स मैसन ने सर्वप्रथम हड़प्पा के विशाल टीलों की ओर ध्यान आकृष्ट किया था।

(सैन्धव सभ्यता के पतन के मत)		(विद्वान)
* सिन्धु नदी की बाढ़	⟶	मार्शल एवं मैके
* वाह्य आक्रमण	⟶	गार्डन चाइल्ड एवं मार्टिम व्हीलर
* जलवायु परिवर्तन	⟶	ऑरेल स्टीन
* भूतात्विक परिवर्तन	⟶	राइक्स एवं डेल्स

diwakar@specialclasses

⇒ मुहरों के अतिरिक्त हड़प्पा सभ्यता की लिपि के नमूने मृद्भाण्डों पर प्राप्त हुए है।

⇒ सिन्धु सभ्यता में अन्नागार, दो मंजिला भवन एवं स्नानागार प्राप्त हुए।

⇒ सिन्धु सभ्यता का तिथिक्रम सर्वप्रथम मेसोपोटामिया के अवशेषों के सापेक्ष कालक्रम से निर्धारित किया गया।

⇒ सिन्धु सभ्यता के मापक 16 गुणज भार के है।

⇒ "अन्नागार" मोहनजोदड़ो की सबसे बड़ी इमारत थी।

⇒ हड़प्पा, मोहनजोदड़ों का ह्रास 2000 BC से प्रारम्भ हुआ।

⇒ सिन्धु सभ्यता के लोग अश्व से परिचित नही थे।

⇒ हड़प्पा संस्कृति के स्थलों का सर्वाधिक संकेन्द्रण घग्गर-हाकरा नदियों के किनारे प्राप्त हुआ है।

⇒ हड़प्पीय फसलों में से गेहूँ, जौ, चावल का प्रसार पश्चिम एशिया से माना जाता है।

(हड़प्पा संस्कृति के स्थानों से प्राप्त वस्तुए)		(सम्भव स्रोत)
तांबा	—	राजस्थान
शंख	—	कच्छ
लाजवर्द मणी	—	अफगानिस्तान
स्वर्ण	—	दक्कन

Scanned by CamScanner

⇒ मृत्तिका-पात्र के साथ शरीर का विस्तारित शवाधान हड़प्पा संस्कृति में प्रमुख अन्त्येष्टि प्रथा थी।

⇒ पशुपति मुद्रा पर अंकित पशु व्याघ्र, हाथी, गैंडा, और भैंसा है।

⇒ सुमेलन : युगल शवाधान ⟶ लोथल

अग्निवेदियाँ ⟶ कालीबंगा

कर्मकारों के निवास ⟶ हड़प्पा

मनकाकारी ⟶ चन्हूदड़ो

diwakar@specialclasses

⇒ हड़प्पावासियों द्वारा निर्मित मृण्मूर्तियों के प्रमुख विषय खिलौने, पूजोपित पशु एवं मानव आकृतियाँ थे।

⇒ ताम्र मूर्तियों एक निधान, जिसे प्राय: हड़प्पा संस्कृति काल से सम्बद्ध किया जाता है, दैमाबाद से प्राप्त हुआ था।

⇒ देसलपुर एवं सुरकोटदा कच्छ प्रदेश में स्थित है।

⇒ (लोथल) से फारस की खाड़ी की मुद्रा प्राप्त हुयी है।

⇒ आमरी संस्कृति सिन्ध क्षेत्र में पनपी।

⇒ धान की भूसी के साक्ष्य रंगपुर (खम्भात की खाड़ी) से प्राप्त हुए।

⇒ काली लकड़ी, हाथी दांत, एवं सोना का निर्यात मेलुहा से होता था।

⇒ मोहनजोदड़ो नगर सर्वाधिक क्षेत्रफल में विस्तृत था।

⇒ हड़प्पीय सीलों का चौकोर आकार सर्वाधिक प्रचलित था।

⇒ पकी मिट्टी के बने हल का प्रतिरूप बनावली से प्राप्त हुआ है।

⇒ हड़प्पावासियों का विनाश आर्यों ने किया, इस मत के समर्थन में कोई भी पुरातात्विक साक्ष्य नहीं मिलता।

⇒ हड़प्पाकाल का एक कांसे का रथ, जिसमें दो बैल जुते हैं और इसे एक नग्न मानव चला रहा है, दैमाबाद (महाराष्ट्र) से प्राप्त हुआ था।

Scanned by CamScanner

⇒ लोथल की खुदाई से एक अत्यंत उन्नत जल-प्रबंधन व्यवस्था प्राप्त हुयी थी।

⇒ हड़प्पाकालीन लिपि वर्णानुक्रमिक नही है, बल्कि मुख्यत: चित्रलिपि है।

⇒ तांबे की एक मानव आकृति हड़प्पा से प्राप्त हुयी है।

⇒ आई०महादेवन ने सिन्धु लिपि के उद्वाचन पर काम किया है।

⇒ हड़प्पा से कब्रिस्तान एच. संस्कृति के साक्ष्य मिले है।

⇒ हड़प्पा से प्राप्त अन्नागार रावी नदी के निकट स्थित था।

⇒ लोथल से एक भाण्ड प्राप्त हुआ, जिस पर "पंचतंत्र की चालाक लोमड़ी" के सादृश्य दृश्य अंकित था।

diwakar@specialclasses

⇒ नगर, कटपलो, दाढरी तथा भगवानपुरा से प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्य इंगित करते हैं कि परवर्ती हड़प्पा सभ्यता के लोग एवं चित्रित धूसर भाण्ड प्रयोग करने वाले लोग सम्पर्क में तो आए परन्तु एक ही क्षेत्र में अलग-अलग बस्तियों में रहे।

⇒ हड़प्पा सभ्यता में सर्वाधिक बाढ़ का सामना मोहनजोदड़ो को करना पड़ा खुदाई में इसके सात स्तर प्राप्त हुए है।

⇒ सिन्धु लिपि दाएं से बाये की ओर है, लेकिन कुछ में दाए से बाए और फिर बाए से दाए की ओर है, इसे बूस्ट्रोफेडन कहते है।

⇒ धौलावीरा भारत में खोजा गया सबसे बड़ा सैंधव स्थल है।

⇒ वर्तमान में ज्ञात सैंधव स्थलों की अनुमानित संख्या 1500 है।

⇒ राखीगढ़ी भारत में खोजा गया दूसरा सबसे बड़ा सैंधव पुरास्थल है।

⇒ मोहनजोदड़ो से प्राप्त "पुजारी का सिर" मंगोलायड प्रजाति का है।

⇒ मोहनजोदड़ो से प्राप्त 'नर्तकी की मूर्ति' "आद्य-आस्ट्रेलायड" प्रजाति की है।

⇒ सिन्धु सभ्यता को सरस्वती सभ्यता भी कहा जाता है, क्योंकि इस सभ्यता के 80% स्थल सरस्वती नदी के आस-पास स्थित थे।

Scanned by CamScanner

⇒ भारत में चांदी की उपलब्धता के प्राचीनतम साक्ष्य हड़प्पा संस्कृति से मिले है।

⇒ "ब्राहुई" बलूचिस्तान की भाषा है, किन्तु शास्त्रीय दृष्टि से यह द्रविण परिवार की भाषा है।

⇒ आधुनिक देवनागिरी लिपि का प्राचीन रूप "ब्राह्मी" है।

⇒ नौसारो पुरास्थल से 'सिन्दूर' के प्रमाण प्राप्त हुए है।

⇒ लोथल का गोदीबाड़ा सम्पूर्ण हड़प्पा संस्कृतमाला में निर्मित पकी ईटों का विशालतम संरचना है।

⇒ हड़प्पा संस्कृति से प्राप्त शिव की मुहर पर निरुपित आकृति की पहचान – योगमुद्रा में बैठे शिव जिनके चारों ओर पशुओं की आकृतियां अंकित है, के रूप में की गयी है।

⇒ नेग्रीटो नृजातीय तत्व हड़प्पा स्थलों के कंकाल अवशेषों से नही मिला है।

diwakar@specialclasses

* लोथल ⇒ गोदीबाड़ा
* कालीबंगा ⇒ जुता हुआ खेत
* धौलावीरा ⇒ हड़प्पन लिपि के बड़े आकार के दस चिन्हों वाला शिलालेख
* बनावली ⇒ पक्की मिट्टी की बनी हुई हल की प्रतिकृति

Scanned by CamScanner

28

⇒ उत्तर वैदिक काल में महत्व प्राप्त किए प्रजापति देवता में पूर्ववर्ती देव विश्वकर्मा एवं हिरण्यगर्भ समाहित हो गये।

⇒ अपने पुरोहित के साथ विदेध माथव के पूर्व की ओर प्रवजन की कथा 'शतपथ ब्राह्मण' में वर्णित है।

⇒ ऋक् संहिता में जंगल की देवी "अरण्यानी" का प्रथम उल्लेख है।

⇒ ऋग्वेद के सूक्तों में हिमवन्त एवं मूजवन्त का उल्लेख किया गया है।

⇒ ऋग्वेद के सूक्तों में उल्लेखित अधिकांश नदियां यमुना व गंगा के पश्चिम में बहती है।

⇒ 'गो - अपहरण' के प्रसंग में ऋग्वेद में प्रमुख रूप से पणियों का नाम आता है।

diwakar@specialclasses

⇒ वैदिक संस्कृति में बौने को "ऋभु" कहते थे।

⇒ उत्तर वैदिक काल के प्रमुख लक्षण जंगलों का व्यापक रूप से जलाया जाना, लौह उपकरणों का निर्माण, एवं ऋतुओं का ज्ञान है।

⇒ ऋग्वेद में लोग इन्द्र का आह्वान भौतिक सुख एवं विजय के प्रयोजन से करते थे।

⇒ अश्वपति, उपनिषदों में उल्लिखित कैकय जनपद का एक दार्शनिक राजा था।

⇒ प्राचीन भारतीय धर्मग्रन्थों में इन्द्र के साथ कृष्ण के विरोध का उल्लेख मिलता है।

⇒ नील लोहित, जो वैदिक ग्रंथों में उल्लिखित एक प्रकार का मृदभाण्ड है, कृष्ण एवं लाल भाण्ड से अभिन्न माना जा सकता है।

⇒ वैदिक ग्रंथो में "खिल्य" शब्द ऊसर भूमि के लिए प्रयुक्त होता था।

⇒ ऋग्वेद में उल्लिखित 'यदु' एवं 'तुर्वस' दो जन थे।

⇒ ऋग्वेद में 'अन्यव्रत' शब्द 'दस्यु' के सन्दर्भ में प्रयुक्त हुआ है।

⇒ "मैं कवि हूं, मेरा पिता भिषज है और मेरी माता अन्न पीसती है।" यह अवतरण ऋग्वेद में मिलता है।

Scanned by CamScanner

⇒ वैदिक कालीन नदियों के प्राचीन एवं आधुनिक नाम -

सरस्वती ⇒ घग्गर हाकरा
शतुद्रि ⇒ सतलज
परुष्णी ⇒ रावी
विपासा ⇒ व्यास

⇒ ऋग्वेद में सम्पत्ति का मुख्य रूप गो-धन था।

⇒ उपनिषद् काल में "ब्रह्मा" का आविर्भाव एक परम सत्ता के रूप में हुआ।

⇒ दसराज्ञ युद्ध का प्रमुख कारण पुरोहितों का षड्यंत्र था।

⇒ वैदिक काल में द्विज में ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य शामिल थे।

⇒ प्राचीन लौह युगीन बस्तियों से सम्बन्धित मृदभाण्ड चित्रित धूसर मृदभाण्ड थे।

⇒

वैदिक देवता	उनके कार्य
पूषन →	वनस्पतियों एवं औषधियों के देवता
सविता →	प्रकाश के देवता
अदिति →	सर्वशक्तिमान देवी
द्यौ →	सूर्य के पिता

⇒ वैदिक संस्कृति में "नप्तृ" शब्द चचेरे भाई बहन, नाना, मामा इत्यादि सम्बन्धियों के लिए प्रयुक्त होता था।

diwakar@specialclasses

⇒

विवाह के प्रकार	आशय/प्रकृति
ब्रह्म विवाह →	समान वर्ण में कन्या का मूल्य चुकाकर
दैव विवाह →	यज्ञ करने वाले पुरोहित के साथ विवाह
प्राजापत्य विवाह →	बिना लेन देन के योग्य वर से विवाह
गान्धर्व विवाह →	प्रेम विवाह
असुर विवाह →	कन्या के बदले वर से धन प्राप्त करना (विक्रय विवाह)

Scanned by CamScanner

⇒ राजा के निर्वाचन से सम्बन्धित सूक्त ऋग्वेद में पाये जाते हैं।

⇒ वृक, लांगल एवं सीर वैदिक शब्दावली में कृषि के उपकरणों के द्योतक हैं।

⇒ ऋग्वेद के आठवें मण्डल की हस्तलिखित ऋचाओं को "खिल" कहते हैं।

⇒ ऋग्वेद के दसवें मण्डल में पुरुष सूक्त में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र वर्णों का उल्लेख है।

⇒ यजुर्वेद की दो शाखायें, शुक्ल यजुर्वेद और कृष्ण यजुर्वेद है। शुक्ल यजुर्वेद को वाजनेयी संहिता भी कहते हैं।

⇒ अथर्ववेद की रचना चारों वेदों में सबसे अन्त में हुयी थी, इसमें 731 सूक्त, 20 अध्याय तथा 6000 मन्त्र हैं।

⇒ अथर्ववेद में परीक्षित को "कुरुओं का राजा" कहा गया है।

⇒ छः वेदाङ्ग - शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द एवं ज्योतिषी हैं।

⇒ सुरा की आहुति "सौत्रामणि" का लक्षण है।

⇒ राज्य के अधिकारी (रत्निन) राजसूय यज्ञ से सम्बन्धित होते थे।

⇒ पुरुषमेध यज्ञ में 25 यूपों ~~[illegible]~~ के प्रयोग का विधान था।

diwakar@specialclasse

⇒ साहित्य में शिव का प्रथम रूप "रुद्र" मिलता है।

⇒ "यूप" याज्ञिक स्तम्भ होते थे।

⇒ चित्रित धूसर मृदभाण्ड वैदिक काल से सम्बन्धित थे।

⇒ "गीता" ग्रन्थ में वर्णव्यवस्था गुणों एवं अभिरुचियों पर आधारित थी।

⇒ वैदिक ग्रंथों में प्रयुक्त "ऋत" शब्द नैतिक व्यवस्था से सम्बन्धित था।

⇒ ऋग्वेद में हल से खींची गई रेखा के लिए "सीता" शब्द का प्रयोग किया गया है।

Scanned by CamScanner

⇒ ऋग्वेद का सर्वप्रमुख देवता इन्द्र है।

⇒ ऋग्वैदिक काल में सर्वप्रथम "राज्याभिषेक" की परम्परा प्रारम्भ हुई।

diwakar@specialclasses

⇒ उत्तर वैदिक काल में केवल वैश्यों पर कर का भार होता था।

⇒ विज्ञानेश्वर वह स्मृतिकार थे, जिन्होंने पिता के जीवन-काल में ही पुत्रों के बीच सम्पत्ति के विभाजन की अनुमति दी।

⇒ जनक के दरबार में गार्गी ने याज्ञवल्क्य को चुनौती दी थी।

⇒ वैदिक काल में "रत्निन" राजकीय सेवारत कुलीन व्यक्ति होते थे, जो रत्न धारण करना पसन्द करते थे।

⇒ यजुर्वेद गद्य एवं पद्य दोनों में रचित है।

⇒ ऋग्वेद में कुल 10 मंडल, 1028 सूक्ति, एव 10462 ऋचायें है, तथा इसे पढ़ने वाले को 'होता' कहते है।

⇒ वैदिक काल में इन्द्र के बाद दूसरे प्रमुख देवता अग्नि थे।

⇒ ऋग्वेद के "केशिन सूक्त" में समाज के चतुर्विध वर्गीकरण का विचार प्राप्त होता है।

⇒ सोम पेय का सम्बन्ध "अग्निष्टोम" नामक वैदिक यज्ञ से था।

⇒ वैदिक देवता वरुण नैतिक व्यवस्था के संरक्षक थे, जो पापिओं को दंड देते थे।

⇒ वैदिक सभा एवं समिति को वैदिक देवता प्रजापति की दो पुत्रियां अथर्ववेद में कहा गया है।

⇒ सामवेद के दो उपनिषद छान्दोग्य एवं जैमनीय है तथा इसका एक ब्राह्मण पंचविंश (तांड्य ब्राह्मण) है।

⇒ यजुर्वेद का पाठन करने वाला एवं यज्ञ कराने वाले पुरोहित को "अध्वर्यु" कहते है।

Scanned by CamScanner

(30)

⇒ नचिकेता और यम के बीच सुप्रसिद्ध संवाद कठोपनिषद् में है।

⇒ प्राचीन भारत के विश्वोत्पत्ति विषयक धारणाओं के अनुसार चारों युग का क्रम – कृत, त्रेता, द्वापर और कलि है।

⇒ ब्रह्मवादिनी लोपमुद्रा ने कुछ वैदिक मंत्रों की रचना की।

⇒ आरम्भिक वैदिक साहित्य में सर्वाधिक वर्णित नदी, सिंधु नदी है।

⇒ "आर्य" भारत के ही मूल निवासी थे इसका सबसे बड़ा प्रमाण है कि 5000 BC से 800 BC के बीच किसी नये जनसमुदाय का साक्ष्य नहीं मिलता है।

⇒ वैदिक काल में "निष्क" शब्द का प्रयोग एक आभूषण के लिए होता था, किन्तु परवर्ती काल में उसका प्रयोग सिक्के के लिए हुआ।

⇒ मूर्तिपूजा का प्रारम्भ पूर्व आर्य काल से माना जाता है।

⇒ "आयुर्वेद" अर्थात "जीवन का विज्ञान" का उल्लेख अथर्ववेद में मिला है।

⇒ वैदिक समाज में "नियोग" शब्द का अर्थ, "निःसन्तान विधवा द्वारा पुत्र प्राप्ति हेतु अपने देवर के साथ संबंध" बनाने के संदर्भ में किया जाता था।

diwakar@specialclasse

⇒ "अग्निष्टोम" को सोम यज्ञ माना जाता था।

⇒ वैदिक देवता पूषन का रथ बकरे द्वारा खींचे जाने का उल्लेख मिलता है।

⇒ "मैत्रेयनाथ" ने विज्ञानवाद (योगाचार) सम्प्रदाय की स्थापना की थी।

⇒ वैदिक साहित्य में वाराह को प्रजापति के रूप में वर्णित किया जाता था।

⇒ ऋग्वैदिक समाज में 'गोप' शब्द का प्रयोग राजा के लिए किया जाता था।

⇒ भगवान विष्णु का तमिल नाम "तिरुमल" है।

⇒ मनु की विधि व्यवस्था में चोरी के अपराध के लिए ब्राह्मण को सर्वाधिक दंड दिया जाता था।

Scanned by CamScanner

⇒ वैदिक युगीन संस्कृति में सामान्य परिस्थितियों में स्त्रीधन का उत्तराधिकार में प्रथम अधिकार पुत्री को प्राप्त था। (31)

⇒ अविवाहित लड़की के पुत्र के लिए स्मृति साहित्य में "कानीन" शब्द प्रयुक्त हुआ है।

⇒ मित्रानी संस्कृति की धार्मिक आस्था में इन्द्र, वरुण, मित्र, नासत्य देवगण विद्यमान थे।

⇒ अनुलोम विवाह का अर्थ है, उच्च वर्ण पुरुष का निम्न वर्ण नारी के साथ विवाह।

⇒ प्रतिलोम विवाह का अर्थ है, उच्च वर्ण की नारी, निम्न वर्ण का पुरुष हो।

diwakar@specialclasses

⇒ वैदिक कालीन राज सेवक — कार्य

संग्रहीतृ → कोषाध्यक्ष

भागदुघ → कर-संग्रहकर्ता

क्षता / क्षत्ती → पांसे के खेल में राजा का सहायक

अक्षवाप → प्रतिहारी / राज प्रसाद (महल) का रक्षक

⇒ धर्मशास्त्रों में भूराजस्व की दर 1/6 थी।

⇒ ब्राह्मण काल का समय 800 ई०पू० से 600 ई०पू० माना जाता है।

⇒ उपवेद — संबंधित वेद

आयुर्वेद → ऋग्वेद

धनुर्वेद → यजुर्वेद

गन्धर्ववेद → सामवेद

शिल्पवेद / अर्थशास्त्र → अथर्ववेद

⇒ ऋग्वेद के दूसरे से सातवें मण्डल तक को 'वंश मंडल / गोत्र मंडल" कहा जाता है।

Scanned by CamScanner

वैदिक संस्कृति

⇒ ऋगवेद की रचना सप्तसैन्धव प्रदेश में हुयी थी।

⇒ ऋगवैदिक आर्य प्रकृति की पूजा करते थे।

⇒ वर्ण व्यवस्था का सर्व प्रथम विवरण ऋगवेद के दसवें मण्डल में उल्लिखित है।

⇒ उपनिषदों का मुख्य प्रतिपाद्य "दार्शनिक विवेचन" रहा है।

⇒ बाल गंगाधर तिलक आर्यों का मूल स्थान "आर्कटिक क्षेत्र" को मानते थे।

⇒ वेद का शाब्दिक अर्थ "ज्ञान" है।

⇒ आर्य-अनार्य युद्ध का वर्णन वेदों में मिलता है।

⇒ ऋगवेद में सूक्तियों की संख्या 1028 है।

⇒ पूर्व वैदिक काल में राजा पर "सभा" और "समिति" का नियंत्रण होता था।

⇒ उत्तर वैदिक काल में समाज का विभाजन वर्ण व्यवस्था के आधार पर था।

⇒ उत्तर वैदिक काल में धार्मिक क्रियाओं में कर्मकाण्ड मुख्य था।

⇒ आर्यों का मुख्य निवास "एशिया माइनर" को माना जाता है।

⇒ नगरीय जीवन वैदिक सभ्यता की विशेषता नही थी।

⇒ मैक्समूलर नामक विद्वान वेदों के अध्ययन के लिए प्रसिद्ध है।

⇒ "महाभाष्य" की रचना पतंजलि ने की थी।

⇒ ऋगवेद सभ्यता में शहरी जीवन का पतन हुआ।

⇒ उत्तर वैदिक युग में पैतृक परिवार होते थे।

⇒ वैदिक युग में "मना" का अर्थ धन होता था।

⇒ सिन्धु घाटी तथा वैदिक दोनों सभ्यताओं में मूर्तिपूजा का प्रचलन नही था।

⇒ "भाग" एवं "बलि" राजस्व के साधन थे।

⇒ पाणिनी एक व्याकरण विद्वान थे, इन्होंने अष्टाध्यायी की रचना की थी।

⇒ वैदिक समाज में प्रकृति पूजा, वर्ण व्यवस्था, पैतृक परिवारों का अस्तित्व था।

⇒ ऋगवेद में वर्णित धर्म का आधार प्रकृति पूजा था।

diwakar@specialclasses

Scanned by CamScanner

⇒ प्राचीन साहित्यों में 8 प्रकार के विवाहों का वर्णन है।

⇒ एशिया माइनर में बोगजकोई नामक स्थान से 1400 BC का एक अभिलेख पाया गया था, जिसमें वैदिक देवताओं का वर्णन है।

⇒ विश्ववारा, घोषा, अपाला आदि विदुषी महिलाएं वैदिक मंत्रों की रचयिता मानी जाती है।

diwakar@specialclasses

⇒ प्रसिद्ध गायत्री मंत्र ऋग्वेद में है।

⇒ वैदिक काल में शासन का सामान्य स्वरूप राजतंत्र था।

⇒ वर्ण व्यवस्था की उत्पत्ति का संकेत सर्वप्रथम ऋग्वेद में मिलता है।

⇒ 16 संस्कारों का वर्णन गृह्य सूत्र के मूल पाठ में मिलता है।

⇒ पर्शियन भाषा "इण्डो-आर्यन" भाषा से सम्बन्ध रखती है।

⇒ "सत्यमेव जयते" उक्ति सर्वप्रथम मुण्डकोपनिषद् में व्यक्त की गई।

⇒ अद्वैत दर्शन का प्रतिपादन उपनिषदों में मिलता है।

⇒ वैदिक काल में राजा को स्वेच्छा से दिया जाने वाला उपहार बलि था।

⇒ वैदिक भारत में राजाओं में बहुविवाह प्रचलित था।

⇒ यजुर्वेद कर्मकाण्डों से विशेष रूप से सम्बन्धित है।

⇒ ऋग्वेद संहिता के मंत्रों का एक चौथाई इन्द्रदेव को समर्पित है।

⇒ ऋग्वेद में वर्णित सबसे सामान्य अपराध पशुओं की चोरी था।

⇒ आत्मा के आवागमन की परिकल्पना सर्वप्रथम ऋग्वेद में मिलती है।

⇒ बोगाजकोई अभिलेख में इन्द्र, वरुण, नासत्य और मित्र देवताओं का विशेष उल्लेख है।

⇒ अथर्ववेद को ब्रह्मवेद कहा गया है।

⇒ दशराज युद्ध परुष्णी नदी के तट पर लड़ा गया।

⇒ भारतीय जाति व्यवस्था अपने श्रेष्ठ (क्लासिकल) स्वरूप में कार्यों के विभाजन पर आधारित है।

Scanned by CamScanner

⇒ वेदांगों की कुल संख्या 6 है।

⇒ सामवेद गायन योग्य मंत्रो का ग्रन्थ है।

⇒ सुदास के विरुद्ध दस राजाओं का युद्ध विश्वामित्र के नेतृत्व में लड़ा गया।

diwakar@specialclasses

⇒ ऋग्वेद का सम्पूर्ण 9वां मण्डल "सोम देवता" को समर्पित है।

⇒ पूर्व वैदिक काल से उत्तरवैदिक वैदिक काल में राजस्व गठन का प्रमुख परिवर्तन यह हुआ कि राज्य के संगठन का आधार कुल न रहकर अपितु भूमि विस्तार हो गया।

⇒ राजा सुदास त्रित्सु वंश से सम्बन्धित था।

⇒ सर्वप्रथम परीक्षित का उल्लेख अथर्ववेद में हुआ।

⇒ पुरोहितों में ब्रह्मा का कार्य यज्ञ के सम्पादन का निरीक्षण करना था।

⇒ प्रारम्भिक वैदिक कालीन आर्यों का मुख्य व्यवसाय पशुपालन था।

⇒ सबसे प्राचीन जानी जाने वाले स्मृति, मनुस्मृति है।

⇒ ऋग्वेद सभ्यता के यज्ञवाद की आलोचना उपनिषदों के ऋषियों ने की।

⇒ श्रुति, वैदिक युगीन इतिहास का प्रधान स्रोत है।

⇒ वैदिक युग में राजा के बाद सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी सेनानी था।

⇒ संत विज्ञानेश्वर ने "मिताक्षरा" की रचना की।

⇒ प्रारम्भिक स्मृतियों के अनुसार ब्राह्मण को शूद्र द्वारा दी गयी भिक्षा नहीं लेनी चाहिए।

⇒ "निष्क" सबसे प्राचीन स्वर्ण सिक्का था।

⇒ पूर्व वैदिक काल में सभा, समिति एवं विदथ में प्रजातांत्रिक मामलों पर विचार विमर्श नहीं किया जाता था।

⇒ राजसूय यज्ञ राजा के राज्याभिषेक से सम्बन्धित है।

⇒ वेदत्रयी में सामवेद, यजुर्वेद एवं ऋग्वेद सम्मिलित है।

Scanned by CamScanner

महाजनपद काल (600 ई०पू० – 325 ई०पू०)

महाजनपद	राजधानी	महाजनपद	राजधानी
गंधार	तक्षशिला	कुरु	इंद्रप्रस्थ
शूरसेन	मथुरा	पांचाल	अहिछत्र
वत्स	कौशाम्बी	कोशल	साकेत
कोशल	श्रावस्ती	अश्मक	पोटली/पोतन
मल्ल	कुशावती	कम्बोज	हाटक

⇒ हर्यक वंश के शासक अजातशत्रु को 'कुणिक' कहा जाता है।

⇒ उदयिन ने गंगा एवं सोन नदियों के संगम पर पाटलिपुत्र नामक नगर की स्थापना की थी।

⇒ शिशुनाग वंश के शासक "कालाशोक" के शासन में वैशाली में द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया।

⇒ कालाशोक को "काकवर्ण" नाम से भी जाना जाता है।

⇒ सिकन्दर महान की मृत्यु 323 ई०पू० बेबीलोन में हुयी थी।

⇒ उत्तरी काले पालिशकृत मृदभाण्ड (NBPW) भारत में द्वितीय नगरीकरण/शहरीकरण के प्रारंभ का प्रतीक माना गया।

⇒ पालि ग्रन्थों में गांव के मुखिया को "भोजक/ग्राम भोजक" कहा गया है।

⇒ उज्जैन का प्राचीन नाम अवन्तिका था।

⇒ नंदवंश का संस्थापक महापद्मनंद था।

⇒ घनानंद को ग्रीक/यूनानी लेखकों द्वारा "अग्रमीज/जैन्ड्रमीज" कहा गया।

⇒ प्राचीन भारत में पहला विदेशी आक्रमण ईरानियों द्वारा किया गया था दूसरा आक्रमण यूनानियों द्वारा किया गया।

⇒ ईरान के हखमनी वंश के शासक "डेरियस/दारयवाहु-I" ने भारतीय भू-भाग को जीतने के बाद उसे फारस साम्राज्य का 20 वां प्रांत (क्षत्रपी) बनाया।

Scanned by CamScanner

⇒ सिकन्दर ने 326 ई०पू० में भारत पर आक्रमण किया था।

⇒ हाईडेस्पस या वितस्ता (आधुनिक नाम झेलम नदी) का युद्ध (326 BC) सिकंदर एवं पोरस के मध्य हुआ था।

⇒ मगध का राजा धनानंद सिकन्दर महान का समकालीन था।

शासक	वंश
बिम्बसार ⟷	हर्यक वंश
कालाशोक ⟷	शिशुनाग वंश
महापद्मनंद ⟷	नंद वंश
बिन्दुसार ⟷	मौर्य वंश

⇒ मगध राज्य की प्रथम राजधानी गिरिव्रज/राजगृह थी। द्वितीय राजधानी पाटलिपुत्र थी, जिसका चयन उदयिन था।

⇒ सोलह महाजनपदों की सूची बौद्ध ग्रंथ "अंगुत्तर निकाय" में उपलब्ध है।

* महाजनपद	आधुनिक क्षेत्र
मगध ⟷	पटना व गया के जिले
वत्स ⟷	इलाहाबाद
कोशल ⟷	अवध
अवंति ⟷	मालवा

⇒ अभिलेखीय साक्ष्य से प्रकट होता है कि राजा नंद के आदेश से एक नहर कलिंग में खोदी गयी थी।

⇒ 'डेरियस' पहला यूनानी शासक था, जिसने भारत के कुछ भाग को अपने अधीन किया था।

⇒ मगध के राजा अजातशत्रु का सदैव वज्जि संघ (वैशाली) के साथ युद्ध रहा।

⇒ वज्जि संघ के विरुद्ध युद्ध में अजातशत्रु ने पहली बार "रथमूसल" तथा "महाशिलाकण्टक" नामक गुप्त हथियारों का प्रयोग किया।

⇒ नंद वंश का अन्तिम सम्राट घननंद था।

Scanned by CamScanner

* राजा	राज्य
प्रद्योत ⟷	अवन्ति
उदयिन ⟷	वत्स
प्रसेनाजित ⟷	कोशल
अजातशत्रु ⟷	मगध

⇒ भारत में सिक्कों / मुद्रा का प्रचलन 600 ई०पू० में हुआ।

⇒ अजातशत्रु एवं प्रसेनाजित "बुद्ध" के समकालीन राजा था।

⇒ शिशुनाग ने अवंति को जीतकर मगध का हिस्सा बना दिया था।

⇒ "बिम्बिसार" ने अंग राज्य का विलय अपने राज्य मगध में कर लिया था।

⇒ अजातशत्रु ने काशी और लिच्छवी का विलय मगध साम्राज्य में किया था।

⇒ पुराणों एवं महाकाव्यों के अनुसार मगध साम्राज्य की स्थापना बृहद्रथ ने की थी।

⇒ मगध राज्य में गणतंत्रात्मक शासन व्यवस्था नहीं थी।

⇒ महापद्मनंद ने मगध साम्राज्य को सर्वाधिक विस्तार दिया और "सर्वक्षत्रांतक" एवं "एकराट" की उपाधि धारण की।

⇒ मगध 6वीं शताब्दी में, प्रारंभ में भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली नगर था।

⇒ भारत पर ईरानी आक्रमण के प्रभाव
1) खरोष्ठी लिपि का प्रचार ✓
2) अभिलेख उत्कीर्ण करने की कला का प्रचार ✓
3) ईरानियों की क्षत्रप प्रणाली का प्रचार ✓
4) घंटा आकार के गुबंज की कला का प्रचार ✓
5) स्त्री अंग-रक्षकों की नियुक्ति ✓

⇒ बिम्बिसार को "सेनिया" (नियमित और स्थायी सेना रखने वाला) कहा जाता था।

⇒ महापद्मनंद को "उग्रसेन" (भयानक सेना का स्वामी) कहा जाता था।

⇒ महाजनपद काल में श्रेणियों के संचालक को श्रेष्ठिन कहा जाता था। "गृहपति" धनी किसान को कहते थे।

Scanned by CamScanner

सुमेलन :

अष्टकुलक ⟷ परामर्शदायी संस्था

महामात्त ⟷ उच्च कोटि के अधिकारी

बलिसाधक ⟷ किसानों से कर वसूलने वाला अधिकारी

शौल्किक/ शुल्काध्यक्ष ⟷ शिल्पियों व व्यापारियों से शुल्क या चुंगी वसूलने वाला अधिकारी

⇒ विश्व का पहला गणतंत्र वैशाली में लिच्छवी द्वारा स्थापित किया गया था।

⇒ महात्मा बुद्ध की सेवा में बिम्बसार ने राजवैद्य "जीवक" को भेजा था। अवन्ति के राजा प्रद्योत के उपचार के लिए भी बिम्बिसार ने जीवक भेजा था।

⇒ बिम्बिसार की हत्या उसके पुत्र अजातशत्रु ने गद्दी प्राप्त करने के लिए की, और अजातशत्रु की हत्या उसके पुत्र उदयिन ने 461 ई०पू० में कर दी और वह मगध का शासक बना।

Scanned by CamScanner

संगम काल

⇒ "लाल चेर" के नाम से प्रसिद्ध चेर शासक "शेनगुट्टुवन" ने कण्णगी (पत्तिनी) के मंदिर का निर्माण करवाया था।

⇒ संगम काल के चोल शासकों में सबसे प्रतापी "करिकाल" था।

⇒ "पदितुप्पत्तु" चेर राजाओं की स्तुतियों का संग्रह है।

⇒ प्राचीन पत्तन पुहार "कावेरी नदी" के मुहाने पर स्थित था।

⇒ कवि- अकादमी दक्षिण भारत में संगम का प्रतिनिधित्व करता था।

⇒ तमिल का गौरव ग्रंथ "जीवकचिन्तामणि" जैन धर्म से सम्बन्धित था।

⇒ तमिल भाषा के "शिलप्पादिकारम्" और "मणिमेकलई" नामक ग्रंथ (बौद्ध धर्म) से सम्बन्धित है।

⇒ संगमयुगीन व्याकरण रचना "तोलकाप्पियम्" सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचना है, यह (तोल काप्पियर) द्वारा रचित है।

⇒ संगमयुग में "उरैयूर" कपास के व्यापार का महत्वपूर्ण केन्द्र था।

⇒ धार्मिक कविताओं का संकलन "कुरल" "तमिल" भाषा में है।

⇒ प्रसिद्ध महाकाव्य "कुरल" के लेखक "तिरुवल्लुवर" है।

⇒ अरिकामेडु, उरैयूर एवं कोरकै आदि संगम युगीन बन्दरगाह थे।

⇒ मुशिरि, तोंडी एवं कोडुमणम पश्चिम तट के "पत्तन" थे।

⇒ "पेरिप्लस आफ द इरीथ्रियन सी" पुस्तक का लेखक अज्ञात है।

⇒ संगमयुगीन "पांड्य राज्य" के संरक्षण में तीनों संगमों का अयोजन हुआ था।

⇒ (मामूलनार) ने उल्लेख किया है कि 'नंदों ने अपना कोष गंगा की धारा में छिपा कर रखा था'।

⇒ "पेरिप्लस आफ द इरीथ्रियन सी" में उल्लिखित कालची बंदरगाह में (मोती) पाये जाते थे।

diwakar@specialclasses

Scanned by CamScanner

⇒ संगम साहित्य में वर्णित "कन्नगी" तमिल महाकाव्य की नायिका है।

⇒ संगम युग के क्लासिकल ग्रंथों की तिथि 100BC – 100AD थी।

⇒ संगम ग्रंथों में उल्लिखित "मुरुगन" 'स्कन्द देवता' से साम्य रखते थे।

⇒ "मरुदम" प्राचीन तमिल प्रदेश में उपजाऊ कृषि भूभाग की संज्ञा थी।

⇒ प्रथम तमिल संगम की स्थापना "अगस्त्य महर्षि" ने की थी।

⇒ अहनानरु एवं पुरनानरु, प्रारम्भिक तमिल साहित्य के महाकाव्य थे।

* (पुस्तक)	(लेखक)
तोलकापियम ⟺	तोलकाप्पियर
शिलप्पादिकारम ⟺	इलांगो आडिगल
मणिमेकलई ⟺	सीतलै शतनार
जीवक चिन्तामणि ⟺	तिरुत्तक्कदेवर

* (संगमकालीन राज्य)	(राजकीय चिन्ह)
चेर ⟷	धनुष
चोल ⟷	बाघ
पाण्ड्य ⟷	मछली

(संगमकालीन शब्द)	(अर्थ)
कुरिंजी ⟷	पहाड़ी (आखेट एवं खाद्य संग्रहण क्षेत्र)
पालई ⟷	मरुभूमि / निर्जन स्थल
मुल्लाई ⟷	जंगल (पशुपालन एवं खाद्य उत्पादन क्षेत्र)
✓ मरुदम ⟷	कृषि भूमि (खाद्य उत्पादन एवं भण्डारण क्षेत्र)
नेडल ⟷	तटीय प्रदेश (मत्स्यग्रहण एवं संग्रहण क्षेत्र)
✓ उलगु ⟷	पत्थर
नडुकुल ⟷	स्मरण-प्रस्तर

diwakar@specialclasses

Scanned by CamScanner

⇒ महाभारत के सर्वप्रथम तमिल अनुवादक "पेरुन्देवार" थे।

(विद्वान)	(संगम साहित्य का प्रस्तावित कालानुक्रम)
एस. वैयपुरी पिल्लई	300 BC से 500 AD
के.ए. नीलकण्ठ शास्त्री	1 BC से 300 AD
वी.आर. रामचन्द्र दीक्षितार	500 BC से 500 AD
एन. सुब्रह्मणियम	300 BC से 300 AD

⇒ तमिल काव्य में आगम वर्ग की कविताएं (प्रेम) सम्बन्धी है।

⇒ संगम युग में "कण्णगी पूजा" का प्रचलन था। कण्णगी, सतीत्व की आराध्य देवी थी।

diwakar@specialclasses

⇒ गणेश, संगमयुग के लोकप्रिय देवता नहीं थे।

⇒ गेहूं संगम युग में प्रचलित नहीं था।

⇒ तमिल साहित्य में यूनानी-रोमन व्यापारियों को "यवन" कहा गया।

⇒ संगम युग में चोल राज्य की राजधानी "उरैयूर" से "पुहार" स्थानान्तरित करने का श्रेय, (करिकाल) को जाता है।

⇒ संगम युगीन शासक (करिकाल) द्वारा "पट्टिनप्पालै" के रचयिता "रुद्रक्कन्नार" को 16 लाख स्वर्ण मुद्रायें प्रदान की गयी थी।

(संगम)	(अध्यक्ष)	स्थान
प्रथम संगम	अगस्त्य	मथुरा
द्वितीय संगम	अगस्त्य एवं तोल्लकाप्पियर	कपाटपुरम/अलवै
तृतीय संगम	नक्कीरार	उत्तरी मदुरा

⇒ (तोल्लकापियम), द्वितीय संगम का एकमात्र शेष ग्रंथ है।

⇒ अगस्त्य ऋषि के बारे में कहा जाता है, कि इन्होंने दक्षिण भारत का आर्यकरण किया था।

Scanned by CamScanner

⇒ स्ट्रैबो के अनुसार संगम युग के पांड्य नरेश ने रोमन सम्राट आगस्टस के दरबार में 20 ई० पू० के लगभग अपना एक दूत भेजा था।

⇒ तिरुवल्लुवर की रचना "कुरल' या 'मुप्पाल' को तमिल भूमि का बाइबिल कहा जाता है।

~~विशेष~~ ⇒ "शिलप्पदिकारम्" को तमिल काव्य का (इलियड) कहा जाता है।

diwakar@specialclasses

⇒ "मणिमेकलई' को तमिल काव्य का (ओडिसी) कहा जाता है।

⇒ कारिकाल ने पुहर/ कावेरीपट्टन की स्थापना की थी।

⇒ 'मुजरिस' चेर राज्य का प्रसिद्ध बन्दरगाह था।

⇒ कावेरी डेल्टा की उपजाऊ भूमि के बारे में कहावत थी कि" जितनी भूमि में एक हाथी लेटता है, उतनी जमीन सात आदमियों का पेट पाल सकती है"।

⇒ "वीरकल"/"नाडुकुल", गाय या अन्य वस्तुओं के लिए लड़ते-लड़ते मरने वाले वीरों के सम्मान में खड़े किये जाने वाले वीर-प्रस्तर को कहा जाता था।

⇒ संगमकालीन साहित्य में 'कोन', 'को' एवं 'मन्नन' शब्दों का प्रयोग राजा के लिए होत था।

⇒ संगम युगीन चोल राज्य में राजसूय यज्ञ "पेरुनरकिल्लि' द्वारा सम्पादित किया गया था।

⇒ संगम युगीन चोल शासक शैव धर्म के अनुयायी थे।

⇒ श्रीलंका पर विजय प्राप्त करने वाला पहला चोल शासक (एलारा) था।

⇒ पाण्ड्य शासक "नेडियोन" ने समुद्र पूजा का प्रारम्भ करवाया।

⇒ मुदुकुडुमी द्वारा 'पलशालै' (अनेक यज्ञशालाये बनाने वाल) की उपाधि धारण की गयी थी।

Scanned by CamScanner

⇒ करिकाल तथा नेदुनजेरलआदन शासकों ने हिमालय तक विजय प्राप्त की थी।

⇒ "वस्त्र उद्योग" संगम काल में सर्वाधिक प्रचलित व्यवसाय था"

⇒ संगमकालीन लोगों का सर्वाधिक व्यापार रोम के साथ होता था।

⇒ संगमयुगीन चोल पुहार पर वार्षिकोत्सव के रूप में इन्द्र की विशेष प्रकार की पूजा होती था।

⇒ संगमकाल में "वेलन" का तात्पर्य मुरुगन स्वामी से था।

⇒ तामिल साहित्य "परिपादल" में (भक्त प्रह्लाद) का वर्णन मिलता है।

⇒ संगमकालीन तामिल साहित्य "पत्तिनप्पालै" की तुलना अश्वघोष के "बुद्धचरित" से की जाती है।

⇒ संगमकाल में युवराज को "कोमहम" कहा जाता था।

⇒ संगमकाल में "पेरूर" शब्द का प्रयोग एक बड़े ग्राम के लिए होता था।

diwakar@specialclasses

* (सूची I) (II)

सूची I	II
कुडमै	भूमिकर
मा	भूमि के पैमाइश की इकाई
वरियार	कर वसूलने वाला अधिकारी
मन्रम	राजा का न्यायालय

⇒ संगम युग में दास प्रथा का अभाव था।

⇒ समाज में गणिकाओं की स्थिति अच्छी थी, इन्हें "परतियर" कहा जाता था।

⇒ चोल राज्य में उत्तम ग्राम प्रशासन था।

⇒ "शिलप्पादिकारम" में पाण्डय शासक नेदुनजेलियन का उल्लेख है।

⇒ "कावेरीपत्तनम" चोलों का मुख्य बन्दरगाह था।

Scanned by CamScanner

⇒ संगम नगर "अरिकामेडु" अपने (मोतियों) और (मलमल) के लिए प्रसिद्ध था।

⇒ संगम कवि कपिलर का आश्रयदाता (पारि) था।

⇒ शिलप्पादिकारम संगम ग्रन्थ में कोवलन और उसकी पत्नी कण्णगी का चित्रण मिलता है।

⇒ संगम युग में ओर्रार शब्द (गुप्तचरों) के लिए प्रयुक्त होता था।

सुमेलन:

(संगमकालीन प्रचलित शब्द)	(आशय)
वेत्जी ⟷	पशु चोरी करना
पुलैयन ⟷	रस्सी बटने वाले
कडैसियर ⟷	कृषक मजदूर
परदवर ⟷	मछुआरे
पदमार ⟷	उत्तर से दक्षिण जाकर बसे ब्राह्मण

diwakar@specialclasses

Scanned by CamScanner

जैन धर्म

⇒ जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर स्वामी जैन धर्म के संस्थापक थे।

⇒ जैन धर्म को कुरूचक, यापनीय, श्वेतपट, निर्ग्रन्थ नामों से भी जानते हैं।

⇒ "जैन" शब्द संस्कृत के 'जिन' शब्द से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ "विजेता" (जितेन्द्रिय) होता है।

⇒ जैन महात्माओं को निर्ग्रन्थ (बन्धन रहित) तथा जैन संस्थापकों को 'तीर्थंकर' कहा गया है।

diwakar@specialclasses

⇒ जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव या आदिनाथ थे।

⇒ पुराणों के अनुसार (ऋषभदेव) एक राजा थे, जिनके पुत्र 'भरत' के नाम पर भारत का नाम 'भारतवर्ष' पड़ा।

⇒ महावीर स्वामी का जन्म 599 ई०पू० (अथवा 540 ई०पू०) वैशाली के निकट (कुण्डग्राम) में हुआ था।

⇒ इनके बचपन का नाम (वर्द्धमान), पिता का नाम सिद्धार्थ, माता का नाम त्रिशला (विदेहदत्ता), पत्नी का नाम यशोदा था।

⇒ 30 वर्ष की अवस्था में ये तपस्या करने निकले।

⇒ 12 वर्ष की कठोर तपस्या के बाद वैशाख मास के दसवें दिन जृम्भिक ग्राम के समीप ऋजुपालिका नदी के तट पर एक साल के वृक्ष के नीचे उन्हें कैवल्य (ज्ञान) प्राप्त हुआ।

⇒ ज्ञान प्राप्ति के पश्चात महावीर ने अपना प्रथम उपदेश (राजगृह) में विपुलाचल पहाड़ी पर वाकार नदी के तट पर दिया।

⇒ इनका प्रथम शिष्य जामाता जामालि बना।

⇒ दधिवाहन की पुत्री चन्दना इनकी प्रथम भिक्षुणी हुयी।

⇒ महावीर स्वामी के समकालीन शासकों बिम्बिसार, अजातशत्रु, उदयन एवं चण्डप्रद्योत की आस्था जैन धर्म थी।

⇒ जैन धर्म ईश्वरीय सर्वोच्च सत्ता में विश्वास नहीं करता तथा पुर्नजन्म को मानता है।

Scanned by CamScanner

⇒ जैन धर्म के त्रिरत्न – सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान एवं सम्यक आचरण है।

⇒ जैन धर्म के पांच महाव्रत - अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी से बचना), अपरिग्रह (सम्पत्ति का अर्जन न करना), एवं ब्रह्मचर्य है।

⇒ जैन धर्म के पांच अणुव्रत, पांच महाव्रतों के समान है, परन्तु गृहस्थ जैनियों के लिए इसकी कठोरता में पर्याप्त कमी की गयी है।

⇒ पांच अणुव्रत के अलावा तीन गुणव्रत का पालन करने की भी शिक्षा जैन धर्म में दी जाती है।

⇒ जैन धर्म में चार शिक्षा व्रत – देशविरति, सामायिक व्रत, प्रोषोधोपवास, और वैया वृत्य का अनुकरण भी आवश्यक है।

⇒ कायाक्लेश या संलेखना पद्धति में उपवास द्वारा आत्म-हत्या का विधान है।

⇒ जैन दर्शन में दो चक्र, उत्सर्पिणी (विकास की अवधि) एवं अवसर्पिणी (ह्रास की अवधि) का वर्णन किया गया है।

⇒ जैन धर्म में प्रलय को मान्यता नही दी गयी है।

⇒ जैन ग्रन्थों में चार अनन्त चतुष्टय – अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त वीर्य एवं अनन्त सुख वर्णित है, जो मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बताये गये है।

⇒ जैन दर्शन को स्यादवाद या अनेकान्तवाद भी कहते है।

⇒ महावीर स्वामी ने 11 गणधर के एक संघ की स्थापना की, जिनका उल्लेख "कल्पसूत्र", "आवश्यक निर्युक्ति" और "आवश्यक-चूर्णि" में मिलता है।

⇒ महावीर स्वामी की मृत्यु के बाद "सुधर्मन" जैन संघ का प्रथम अध्यक्ष बना, उसके बाद जम्बू 44 वर्ष तक संघ का अध्यक्ष रहा।

diwakar@specialclasses

Scanned by CamScanner

⇒ चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में पाटलिपुत्र में "प्रथम जैन संगीति" का आयोजन हुआ। इसके अध्यक्ष "स्थूलभद्र" थे।

⇒ कलिंग नरेश खारवेल के हाथी गुम्फा अभिलेख में जैन धर्म का प्राचीनतम अभिलेखीय साक्ष्य मिलता है।

⇒ चालुक्यवंश के शासक जयसिंह सिद्धराज और कुमारपाल के दरबारी कवि हेमचन्द्र ने "परिशिष्ट पर्वन" नामक जैन ग्रन्थ की रचना की।

diwakar@specialclasses

⇒ गंग वंश के राजा राजमल चतुर्थ का मंत्री एवं सेनापति "चामुण्डराय" ने 974 ई० में श्रवणबेलगोला में बाहुबली जिन मूर्ति (गोमतेश्वर) का निर्माण करवाया।

⇒ चन्देल शासक धंग के शासनकाल में खजुराहो में जैन मन्दिरों का निर्माण प्रारम्भ हुआ।

⇒ सोलंकी शासक भीमदेव प्रथम के मंत्री "विमलशाह" ने 'दिलवाड़ा' के प्रसिद्ध जैन मन्दिर का निर्माण कराया।

⇒ महावीर स्वामी की मृत्यु के बाद जैन धर्म श्वेताम्बर और दिगम्बर संप्रदायों में विभक्त हो गया।

⇒ "श्वेताम्बर" संप्रदाय के प्रमुख स्थूलभद्र थे, ये श्वेत वस्त्र पहनते थे। इन जैनियों को यति, आचार्य तथा साधु कहा जाता था।

⇒ "दिगम्बर" संप्रदाय के प्रमुख भद्रबाहु थे, जो निवस्त्र रहते थे। दिगम्बर जैनियों को क्षुल्लक, ऐल्लक और निर्ग्रन्थ कहा जाता था।
(निर्ग्रन्थ = बन्धन रहित)

⇒ प्रथम जैन सभा का आयोजन चतुर्थ शताब्दी ई०पू० में स्थूलभद्र की अध्यक्षता में पाटलिपुत्र में हुआ था। इसी सभा में जैन धर्म का विभाजन श्वेताम्बर एवं दिगम्बर संप्रदायों में हो गया था।

Scanned by CamScanner

⇒ द्वितीय जैन सभा का आयोजन 513 या 526 ई०पू० देवार्धिगण या क्षमाश्रमण की अध्यक्षता में वल्लभी में हुआ था। इसी समय जैन साहित्यों → 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छेद तथा 4 मूल सूत्र एवं अनुयोग सूत्र का संकलन हुआ।

⇒ जैन साहित्य को "आगम" (सिद्धान्त) कहा जाता है, ये "अर्द्धमागधी" या "मागधी" या प्राकृत भाषा में लिखे गये हैं।

⇒ "कल्पसूत्र" (भद्रबाहु) द्वारा रचित महत्वपूर्ण जैन ग्रन्थ है।

diwakar@specialclasses

⇒

क्रम	तीर्थंकर	प्रतीक
प्रथम	ऋषभदेव या आदिनाथ	वृषभ
22वें	अरिष्टनेमि	शंख
23वें	पार्श्वनाथ	सर्पफण
24वें	महावीर	सिंह

Scanned by CamScanner

बौद्ध धर्म

⇒ बौद्ध धर्म के संस्थापक गौतम बुद्ध थे।

⇒ गौतम बुद्ध का जन्म 563 ई०पू०, नेपाल की तराई में स्थित कपिलवस्तु के लुम्बिनी नामक स्थान पर हुआ था।

⇒ इनके पिता शुद्धोधन (कपिलवस्तु के शाक्य गण के प्रधान) एवं माता मायादेवी (कोलिय गणराज्य की कन्या) थी।

⇒ इनका पालन पोषण इनकी मौसी "महाप्रजापति गौतमी" द्वारा किया गया था। इनकी पत्नी यशोधरा (शाक्य कुल की) थी।

⇒ इनके पुत्र का नाम राहुल था।

diwakar@specialclasses

⇒ राज्य भ्रमण के दौरान इन्होंने वृद्ध व्यक्ति, बीमार व्यक्ति, एक शवयात्रा तथा सन्यासी को देखा और विचलित होकर 29 वर्ष की अवस्था में गृह त्याग दिया।

⇒ गृह त्याग की घटना को बौद्धग्रंथों में "महाभिनिष्क्रमण" कहा गया है। वैशाली के समीप बुद्ध की मुलाकात "आलार कालाम" नामक सन्यासी से हुयी जो इनके "प्रथम गुरु" थे।

⇒ बुद्ध गया में एक पीपल के पेड़ के नीचे तपस्या के पश्चात 8वें दिन बैशाख पूर्णिमा के दिन इन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुयी और वे "बुद्ध" कहलाये।

⇒ ज्ञानप्राप्ति के पश्चात सारनाथ में बुद्ध ने पांच ब्राह्मणों को अपना प्रथम उपदेश दिया, इस घटना को "धर्मचक्रप्रवर्तन" कहा जाता है।

⇒ अपने परमशिष्य आनन्द के कहने पर बुद्ध ने वैशाली में महिलाओं को संघ में प्रवेश की अनुमति दे दी।

⇒ महाप्रजापति गौतमी संघ में प्रवेश करने वाली प्रथम महिला थी।

⇒ ज्ञानप्राप्ति के 20वें वर्ष बुद्ध ने श्रावस्ती में अंगुलिमाल नामक डाकू को अपना शिष्य बनाया।

Scanned by CamScanner

⇒ बुद्ध के सबसे अधिक शिष्य "कोसल" राज्य में बने तथा यहीं पर बुद्ध ने अपने धर्म का सबसे अधिक प्रचार किया।

⇒ जीवन के अन्तिम वर्ष (483 ई०पू०) अपने शिष्य चुन्द के यहां पावा में सूकरमाद्दव से युक्त भोजन खाने से अतिसार रोग से पीड़ित हो गये।

⇒ बुद्ध बीमार हालत में ही कुशीनगर गये और अपना अन्तिम उपदेश सुभद्द को दिया तथा 80 साल की आयु में (483 BC) में इनकी मृत्यु हो गयी। जिसे "महापरिनिर्वाण" कहा गया है।

diwakar@specialclasses

⇒ बौद्ध धर्म के चार आर्य सत्य है:- "दुःख", "दुःख समुदाय", "दुःख निरोध" एवं "दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा"।

⇒ बौद्ध धर्म में अष्टांगिक मार्ग का अनुशीलन करने की शिक्षा दी गयी है।

⇒ बौद्ध धर्म मूलतः अनीश्वरवादी, अनात्मवादी है, फिर भी पुनर्जन्म की इसमें मान्यता है।

⇒ बौद्ध धर्म के अनुसार जीवन का चरम लक्ष्य निर्वाण प्राप्ति है।

⇒ बौद्ध दर्शन - क्षणिकवादी, अन्तः शुद्धिवादी, नितान्त कर्मवादी, एवं अनीश्वरवादी सिद्धान्तों पर आधारित है।

⇒ बौद्ध धर्म के त्रिरत्न - बुद्ध, धम्म, एवं संघ है।

⇒ गौतम बुद्ध की मृत्यु के बाद चार बौद्ध संगीतियों का आयोजन किया गया।

⇒ प्रथम बौद्ध संगीति, 483 ई०पू० में राजगृह की सप्तपर्णी गुफा में महाकस्सप की अध्यक्षता में, अजातशत्रु के शासन काल में आयोजित की गयी थी।

Scanned by CamScanner

⇒ प्रथम संगीति में बुद्ध की शिक्षाओं का संकलन "सुत्त पिटक" और "विनय पिटक" नामक ग्रन्थों में हुआ।

⇒ द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन 283 ई०पू० में वैशाली के बालुकाराम विहार नामक स्थान में सुबुकामी की अध्यक्षता में कालाशोक के शासनकाल में हुआ।

⇒ तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन अशोक के शासनकाल में पाटलिपुत्र के अशोकाराम विहार में मोग्गलिपुत्ततिस्य की अध्यक्षता में 251 ई०पू० हुआ।

⇒ तृतीय संगीति में अभिधम्म नामक तीसरा पिटक भी जोड़ा गया।

⇒ चर्तुथ बौद्ध संगीति कनिष्क के शासनकाल में कश्मीर के ~~कुण्डल~~ कुण्डलवन नामक स्थान पर 102 ई० में वसुमित्र की अध्यक्षता (उपाध्यक्ष - अश्वघोष) में सम्पन्न हुयी।

⇒ इस संगीति (चुतुर्थ) में बौद्धों ने "संस्कृत भाषा" को अपना लिया।

⇒ इसके बाद बौद्ध धर्म हीनयान एवं महायान नामक दो संप्रदायों में विभाजित हो गया।

⇒ हीनयान सम्प्रदाय में बुद्ध को महापुरूष माना जाता है, तथा मूर्तिपूजा का विरोध किया जाता है। यह व्यक्तिवादी धर्म है।

⇒ महायान सम्प्रदाय के अनुयायी बुद्ध को देवता मानकर मूर्तिपूजा करते हैं।

diwakar@specialclasses

⇒ हीनयान दो अन्य सम्प्रदायों वैभाषिक एवं सौत्रान्तिक में विभाजित हो गया।

⇒ महायान भी दो शाखाओं में विभाजित हुआ, "माध्यमिकवाद" एवं "विज्ञानवाद" में।

Scanned by CamScanner

⇒ माध्यमिकवाद या शून्यवाद मत के प्रवर्तक (नागार्जुन) हैं। इस मत को सापेक्षवाद भी कहा जाता है।

⇒ "विज्ञानवाद" या योगाचार मत की स्थापना मैत्रेय या मैत्रेयनाथ ने की थी।

⇒ बौद्ध साहित्य के त्रिपिटक (पालि भाषा) में रचित है।

⇒ सुत्त पिटक में बौद्ध धर्म की शिक्षायें एवं बुद्ध के उपदेश संग्रहीत है।

⇒ विनय पिटक में संघ के आचार विचार एवं नियम संगृहीत है।

⇒ अभिधम्म पिटक में बौद्ध ~~दार्शनिक~~ दार्शनिक सिद्धान्तों का वर्णन है।

⇒ जातक कथाओं में बुद्ध के पूर्व जन्म की कथायें हैं इसमें कुल 549 कथाओं का संगृहण पालि भाषा में है।

⇒ दीपवंश एवं महावंश में सिंहलद्वीप (श्रीलंका) का इतिहास पालि भाषा में है, जिससे मौर्य इतिहास की जानकारी मिलती है।

⇒ मिलिन्दपन्हो, नागसेन द्वारा पालिभाषा में रचित ग्रन्थ है, जिसमें यूनानी राजा मिनेण्डर और बौद्ध भिक्षु नागसेन के बीच वार्तालाप का वर्णन है।

diwakar@specialclasses

Scanned by CamScanner

⇒ राष्ट्रकूट शासक (दन्तिदुर्ग) ने एलोरा में "दशावतार का मंदिर" बनवाया था।

⇒ भगवान विष्णु को अपना इष्ट देव मानने वाले भक्त ("वैष्णव") कहलाये तथा भागवत धर्म 5 वीं शताब्दी में वैष्णव धर्म के नाम से जाना गया।

⇒ मत्स्यपुराण में भगवान विष्णु के दश अवतारों का वर्णन मिलता है - मत्स्य, कूर्म (कच्छप), वाराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, बुद्ध एवं कल्कि।

⇒ अवतारों में भगवान कृष्ण का नाम नहीं मिलता, क्योंकि कृष्ण स्वयं भगवान के साक्षात् स्वरूप हैं।

⇒ विष्णु के अवतारों में "वाराह अवतार" सर्वाधिक लोकप्रिय था, वराह का सर्वप्रथम उल्लेख (ऋग्वेद) में मिलता है।

⇒ वासुदेव कृष्ण सहित चार अन्य वृष्णि वीरों की पूजा (चतुर्व्यूह) के रूप में की गयी है, जिसका उल्लेख "विष्णु पुराण" में मिलता है।

⇒ दक्षिण भारत में वैष्णव धर्म के सन्त "अलवार" कहलाए, इनकी संख्या (12) बतायी गयी है।

⇒ (पाञ्चरात्र सिद्धान्त) वैष्णव धर्म का प्रमुख मत है, जिसका उदय तीसरी शताब्दी ई०पू० में हुआ।

diwakar@specialclasse

⇒ (पाञ्चरात्र) सम्भवतः पांच दिन और पांच रात चलने वाला यज्ञ था, नारद के अनुसार यह ज्ञान के पांच भेदों का विवेचन करने वाला सिद्धान्त है।

⇒ वीर पूजा या (पंचवीर), वैष्णव धर्म में वासुदेव कृष्ण के अतिरिक्त वृष्णिवंश के चार अन्य देवताओं (संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध एवं साम्ब) की पूजा को कहते थे।

⇒ भगवान विष्णु को पूजा-उपासना से प्रसन्न करने के लिए आयोजित अनुष्ठान को वैष्णव धर्म में (नवधा भक्ति) कहा गया है। इसका सर्वप्रथम उल्लेख श्वेताश्वतर उपनिषद् में मिलता है, एवं विस्तृत उल्लेख श्रीमद् भगवतगीता में मिलता है।

Scanned by CamScanner

भागवत धर्म (वैष्णव धर्म)

⇒ भागवत धर्म के प्रवर्तक वृष्णिवंशी या सात्वत वंशी श्रीकृष्ण (वासुदेव) थे।

⇒ छान्दोग्य उपनिषद् में सर्वप्रथम उल्लेख मिलता है, जिसमें श्रीकृष्ण को देवकी पुत्र एवं महर्षि घोर अंगिरस का शिष्य बताया गया है।

⇒ जैन परम्परा के अनुसार वासुदेव कृष्ण 22वें तीर्थंकर अरिष्टनेमि के समकालीन थे।

⇒ ऋग्वेद में विष्णु आकाश के देवता के रूप में जाने जाते थे।

⇒ महाभारत काल में वासुदेव कृष्ण का तादात्म्य (विष्णु) से स्थापित किया गया है।

⇒ भागवत धर्म मुख्यरूप से पाणिनी के काल में अत्यधिक प्रचलित हुआ, उस काल में वासुदेव की पूजा करने वाले वासुदेवक कहलाते थे।

⇒ मेगस्थनीज ने 'इण्डिका' में कृष्ण को 'हेराक्लीज' नाम से वर्णित किया है।

⇒ भागवत धर्म का सिद्धान्त "श्रीमद् भागवत गीता" में वर्णित है।

⇒ भगवतगीता में प्रतिपादित "अवतार सिद्धान्त" भागवत धर्म की महत्वपूर्ण विशेषता है।

⇒ भागवत सम्प्रदाय के नायकों का विवरण "वायु पुराण" में मिलता है।

(1) संकर्षण (रोहिणी पुत्र)
(2) वासुदेव (देवकी पुत्र)
(3) प्रद्युम्न (रूक्मणी पुत्र)
(4) साम्ब (जाम्बवती पुत्र)
(5) अनिरुद्ध (प्रद्युम्न पुत्र)

⇒ ऐतरेय ब्राह्मण में विष्णु का उल्लेख सर्वोच्च देवता के रूप में किया गया है।

diwakar@specialclasses

⇒ (गुप्तकाल) में वैष्णव धर्म, चरमोत्कर्ष पर था, गुप्त शासक "परमभागवत" की उपाधि धारण करते थे।

⇒ विष्णु का वाहन 'गरुण' (गुप्त वंश) का राजचिन्ह था।

⇒ गुप्त काल में ही देवगढ़ (झांसी) का प्रसिद्ध (दशावतार) मंदिर बनवाया गया था।

Scanned by CamScanner

⇒ कश्मीरी शैव सम्प्रदाय शुद्ध रूप से दार्शनिक अथवा ज्ञानमार्गी है, इसे त्रिकदर्शन भी कहा गया है।

⇒ (त्रिकदर्शन) की तीन शाखायें स्पन्दन शास्त्र, आगम शास्त्र एवं प्रत्यभिज्ञा शास्त्र है।

diwakar@specialclasses

⇒ कश्मीरी शैव सम्प्रदाय के प्रवर्तक वसुगुप्त थे, जो (स्पन्दनशास्त्र) शाखा के भी पहले दार्शनिक थे।

⇒ प्रत्यभिज्ञा शास्त्र के प्रवर्तक सोमानन्द थे, जिनकी रचना का नाम "शिव दृष्टि" है।

Scanned by CamScanner

⇒ मेगस्थनीज ने इंडिका में (डायनोसिस) नाम से "भगवान शिव" का उल्लेख किया है।

⇒ मौर्योत्तर काल में कुषाण शासक विम कैडफिसस की मुद्राओं पर त्रिशूल-धारी शिव और नन्दी के चित्रों का अंकन मिलता है तथा पृष्ठ भाग पर महेश्वर अंकित है। यह शैव धर्म से सम्बन्धित प्रथम अभिलेखीय साक्ष्य है।

diwakar@specialclasses

⇒ कालिदास कृत "कुमारसम्भव" महाकाव्य में शिव और शक्ति के सम्मिलित स्वरूप ("अर्धनारीश्वर") की कल्पना की गयी है।

⇒ समुद्रगुप्त के समय का प्रयाग प्रशस्ति में शिव की जटा से गंगा निकलने का उल्लेख मिलता है।

⇒ गुप्तकाल में शिव के नाम पर जुलूसों का भी आयोजन होता था, जिसे (देवद्रोणी) कहा जाता था।

⇒ एलीफेन्टा गुफा में स्थित "त्रिमूर्ति" (ब्रह्मा + विष्णु + शिव) गुप्तकालीन है।

⇒ दक्षिण भारत में शैव धर्म का प्रचार प्रसार करने वाले सन्तों को ("नयनार") कहते थे। इनकी संख्या (63) थी।

⇒ शैव धर्म के अनुसार सृष्टि के तीन रत्न हैं,

(i) शिव (यह कर्ता है)
(ii) शक्ति (यह कारण है)
(iii) बिन्दु (यह उपादान है)

⇒ शैव सिद्धान्त के चार पद हैं:- विद्या, क्रिया, योग एवं चर्या।

⇒ शैवमत के तीन पदार्थ हैं:- पति (स्वामी), पशु (आत्मा), पाश (बन्धन)

⇒ ("लिंगायत)" दक्षिण भारत में शैव उपासकों का एक सम्प्रदाय था जो शिवलिंग के उपासक थे। इस सम्प्रदाय के संस्थापक कल्याणी के शासक कल्चुरि विज्जल के प्रधानमंत्री वासवराज एवं उनके भतीजे चिन्नावासव को माना जाता है।

⇒ लिंगायत सम्प्रदाय का दर्शन "विशिष्टाद्वैत" के नाम से जाना जाता है।

Scanned by CamScanner

शैव धर्म

⇒ शिव के उपासक "शैव" कहलाए एवं इनसे सम्बन्धित धर्म शैव धर्म कहलाया।

⇒ शैव धर्म, भारत का प्राचीनतम धर्म है। जिसका प्रमाण सिन्धु घाटी सभ्यता में प्राप्त होता है।

diwakar@specialcla

⇒ ऋग्वेद में शिव का नाम "रुद्र" मिलता है।

⇒ उत्तर वैदिक काल में, तैत्तिरीय संहिता में इनका नाम ("शिव") मिलता है।

⇒ अथर्ववेद एवं श्वेताश्वतर उपनिषद् में "शिव" का नाम (महादेव) मिलता है।

⇒ लिंगपूजा का प्रथम उल्लेख मत्स्य पुराण में है।

⇒ शिव की प्राचीनतम मूर्ति पहली शताब्दी ई० में मद्रास के निकट रेनीगुंटा में प्रसिद्ध (गुडिमल्लम लिंग) के रूप में प्राप्त हुई है।

⇒ शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ से पता चलता है कि प्रजापति द्वारा रखे गये शिव के आठ नामों में से रुद्र, शर्व, उग्र और अशनि - शिव के (विध्वंशकारी रूप) एवं भव, भवपति, ईशान तथा महादेव नाम कल्याणकारी रूप थे।

⇒ चर्म धारण करने के कारण शिव को (कृत्तिवासन) की संज्ञा दी गयी।

⇒ सूत्र ग्रंथों में (रुद्र) की स्तुति में 12 नाम मिलते हैं।

⇒ वामन पुराण में शैव संप्रदाय की संख्या चार है - शैव, पाशुपत, कापालिक एवं कालामुख।

⇒ शैव सम्प्रदाय के अनुसार कर्ता शिव है, कारण शक्ति एवं उपादान बिन्दु है।

⇒ पाशुपत, शैव मत का सबसे प्राचीन सम्प्रदाय है, इसके संस्थापक ✓ लकुलीश या नकुलीश थे।

⇒ पाशुपत सम्प्रदाय के अनुयायी ("पंचार्थिक") कहलाते थे, इस मत का प्रमुख सैद्धान्तिक ग्रन्थ पाशुपतसूत्र है।

⇒ कापालिक संप्रदाय के इष्टदेव भैरव थे जिन्हें सुरा तथा नरबलि का नैवेद्य चढ़ाया जाता था।

⇒ कालामुख सम्प्रदाय को शैव पुराण में (महाव्रतधर) कहा गया है, इस सम्प्रदाय के अनुयायी नर-कपाल में भोजन, जल तथा सुरापान करते थे और शरीर पर भस्म लगाते थे।

Scanned by CamScanner

अन्य अभिलेख (मौर्यकालीन)

(i) पानगोशरिया गुहालेख : सिहोर जिला, म० प्र०।
* अशोक को "महाराजकुमार" कहा गया है।

(ii) लम्पक अभिलेख : * आधुनिक लघमान (काबुल)
सीरियाई भाषा में

(iii) महास्थान अभिलेख : * बोगरा जिला, पश्चिम बंगाल
(पूर्वनाम - पुण्ड्रनगर)
* इसमें इस क्षेत्र में अकाल के दौरान महामात्यों को सहायता का आदेश है।

(iv) सोहगौरा ताम्रलेख : गोरखपुर (उ० प्र०)
* प्रथम ताम्र अभिलेख
* अकाल के समय राज्य द्वारा अनाज वितरण का वर्णन।

diwakar@specialclasses

अशोक के शिलालेख		खोजकर्ता
दिल्ली - टोपरा	→	1785, कैप्टन पोलियर
बराबर - नागार्जुनी गुफा	→	1785, हैरिंग्टन
इलाहाबाद स्तम्भ लेख	→	1834, टी. एस. बर्ट
भाब्रू	→	1840, कैप्टन बर्ट
कालसी	→	फारेस्ट
मानसेहरा	→	कैप्टन ले, 1889
रुम्मिनदेई	→	फिहरर 1896
सारनाथ स्तम्भ	→	आरेल स्टाइन 1905
मस्की	→	बीडेन 1915

Scanned by CamScanner

③ लौरिया - अरराज
④ लौरिया - नन्दनगढ़ } चम्पारन, बिहार
⑤ रामपुरवा -

⑥ प्रयाग - कौशाम्बी से जहाँगीर द्वारा इलाहाबाद के किले में लाया गया।

लघु स्तम्भ अभिलेख: इन पर अशोक की "राजघोषणाएं" खुदी है।

① साँची — रायसीन, म०प्र०।
② सारनाथ — वाराणसी, उ०प्र०।
③ कौशाम्बी - इलाहाबाद के निकट, उ०प्र०।
- "रानी का अभिलेख" भी कहते है।
- अशोक के एक मात्र पुत्र (अभिलेखों में) "तीवर" का उल्लेख।

④ रुम्मिनदेई :- नेपाल की तराई में स्थित।
- राज्यभिषेक के 20वें वर्ष नेपाल आकर धार्मिक कर
- "बलि" को माफ किया।
- भूमिकर घटाकर 1/8 भाग कर दिया।
- इसे "आर्थिक अभिलेख" भी कहते है।
- अशोक का सबसे छोटा अभिलेख माना जाता है।

⑤ निग्लीवा (≡ निगालि सागर स्तम्भ अभिलेख)
- नेपाल की तराई में स्थित।
- राज्याभिषेक के 12वें वर्ष अशोक निगालि सागर (नेपाल) आया तथा कोनकमुनि के स्तूप का संवर्द्धन किया।

diwakar@specialclasses

गुहा लेख:

- राज्याभिषेक के
  - 12वे वर्ष — सुदामा गुफा
  - 19वें वर्ष — कर्ण चौपार गुफा

  } बराबर की पहाड़ियों में स्थित (≡ खलतिक पर्वत)

12 वें वर्ष — विश्व झोपड़ी गुफा

इन गुफा लेखों की भाषा प्राकृत, लिपि ब्राह्मी है।

Scanned by CamScanner

पृथक लेख
↓
(जौली और जौगढ़ अभिलेखों में 11, 12, एवं 15 के स्थान पर उत्कीर्ण)

- प्रथम * सब मनुष्य मेरी सन्तान है, और मैं उनके इसलोक एवं परलोक में सुख की कामना करता हूँ। प्रत्येक 5 वर्ष पर "महामात्य" सभी नगरों का दौरा करेंगे।
- द्वितीय – * "सम्राट की इच्छा है कि उससे डरें नहीं, उसमें विश्वास रखे तथा वे सिर्फ सुख प्राप्त करेंगे, दुःख नहीं।
  * "सभी मनुष्य मेरी प्रजा है।"

diwakar@specialclasses

लघु शिलालेख:

प्रमुख लघुशिलालेख	विशेष वर्णन
मस्की अभिलेख (कर्नाटक, रायचूर जिला)	→ अशोक का नाम "अशोक" एवं उपाधि "बुद्ध शाक्य"
भाब्रू या बैराट अभिलेख (जयपुर, राजस्थान)	→ अशोक का नाम "प्रियदर्शी"; बौद्ध धर्म के त्रिरत्न → बुद्ध, धम्म, संघ का उल्लेख
नेत्तूर (मैसूर), उडेगोलम् (बेल्लारी, कर्नाटक), गुर्जरा (दतिया, म० प्र०)	"अशोक" नाम का उल्लेख
एर्रगुडि	→ अन्य अभिलेखों के विपरीत लेखन शैली बायें से दाएँ एवं दाएँ से बायें (बुस्ट्रोफेडन) है।

वृहद् स्तम्भ अभिलेख:

लेख -7, 6 स्थानों से प्राप्त स्तम्भ अभिलेखों पर उत्कीर्ण।

(1) दिल्ली – मेरठ : * मूलतः मेरठ में स्थापित, "फिरोज तुगलक" द्वारा दिल्ली लाया गया।
* खोज 1750 में टीफेन थेलर द्वारा।

(2) दिल्ली – टोपरा : * टोपरा, अम्बाला जिला, हरियाणा से फिरोज तुगलक द्वारा दिल्ली लाया गया।
* एक मात्र स्तम्भ अभिलेख जिस पर 7 वां लेख अंकित है, अन्य पर मात्र 6 ही अंकित है।

↓
("अशोक का अन्तिम अभिलेख")

Scanned by CamScanner

अशोक के अभिलेख (दीर्घ) — मुख्य विषयवस्तु

- प्रथम → जीव हत्या पर निषेध
- द्वितीय → मनुष्यों एवं पशुओं की चिकित्सा व्यवस्था
- तृतीय → राज्याभिषेक के 12वें वर्ष आज्ञा दी गयी है कि राज्य के अधिकारी (रज्जुक, प्रादेशिक, युक्त) प्रति पांचवे वर्ष राज्य का दौरा कर प्रजा की देखभाल करे।
- चतुर्थ → प्रियदर्शी के धर्म आचरण से भेरी घोष, धम्मघोष में बदल गया।
- पाचॅवा → राज्याभिषेक के 14वें वर्ष "धम्ममहापात्र" की नियुक्ति जो जनता के कल्याण के लिए कार्य करेगें।
- छठा लेख → "मैं कही भी कुछ भी कार्य करता रहूँ, लेकिन प्रजा के समस्याओं की पूरी जानकारी मुझे दी जाये"
- सातवाँ लेख → सभी सम्प्रदाय के लोग सभी जगह निवास करे
- आठवा लेख → राज्याभिषेक के 10वें वर्ष धम्मयात्रा का प्रारम्भ गया से किया
- नवाँ लेख → दासों/सेवकों के प्रति शिष्ट व्यवहार, गुरुजनों का आदर, ब्राह्मणों एवं श्रमणों को दान।
- दसवाँ लेख → यश, कीर्ति की जगह धम्म का पालन
- ग्यारहवां लेख → धम्म का गुणगान
- बारहवा लेख → साम्प्रदायिक सहिष्णुता को बढ़ावा
- तेरहवां लेख → राज्याभिषेक के 9वें वर्ष कलिंग युद्ध के रक्तपात का वर्णन। अपने साम्राज्य की सीमा और सीमावर्ती राज्यों का उल्लेख।
- चौदहवा लेख → इसमें उपरोक्त अभिलेखों की बाते ही दुहराई गयी है तथा सभी स्थानों पर 14वें लेख के लेखन में भिन्नता और अपूर्णता है।

diwakar@specialclasses

Scanned by CamScanner

जैनग्रंथ: "परिशिष्ट पर्वन" चन्द्रगुप्त मौर्य को क्षत्रिय बताया गया है।

क्षेमेन्द्र कृत वृहत्कथा मंजरी: चन्द्रगुप्त को नन्द वंश का बताया गया है।

सोमदेव कृत कथासारित्सागर: चन्द्रगुप्त मौर्य को नन्द वंश का बताया गया है।

अशोक के अभिलेख

* 40 से अधिक अभिलेख प्राप्त हुए हैं।
* सर्वप्रथम (1837 ई०) में जेम्स प्रिंसेप ने अशोक के दिल्ली टोपरा अभिलेख को पढ़ने में सफलता पायी थी।
* सबसे पहले 1750 में दिल्ली -मेरठ अभिलेख टीफेन थेलर द्वारा खोजा गया था।

- शिलालेख
  - दीर्घ — 14 लेख, 8 स्थानों से प्राप्त
  - लघु — 18 स्थलों से प्राप्त
- स्तम्भ लेख
  - दीर्घ — संख्या-7, स्थल -6
  - लघु — 5 स्थलों से प्राप्त
- गुहालेख — गुफाओं में उत्कीर्ण लेख

सभी अभिलेखों की भाषा प्राकृत तथा लिपियाँ खरोष्ठी, आरमेइक एवं यूनानी है।

diwakar@specialclasses

दीर्घ शिला लेख: "चतुर्दश (14) शिलालेख" भी कहा जाता है।

स्थल:
(1) शहबाजगढ़ी (पेशावर, पाकिस्तान) – खरोष्ठी लिपि
(2) मानसेहरा (हजारा, पाकिस्तान) – खरोष्ठी लिपि
(3) कालसी (देहरादून, उत्तराखण्ड)
(4) गिरनार (गिरनार पहाड़ी, कठियावाड़ के जूनागढ़ में)
(5) धौली (पुरी, उड़ीशा)
(6) जौगढ़ (गंजाम, उड़ीशा)
} 11, 12, व 13वें शिलालेख उत्कीर्ण नहीं है। उसके स्थान पर दो अन्य लेख "पृथक कलिंग प्रज्ञापन" है।
(7) एर्रगुडि (कर्नूल, आंध्र प्रदेश)
(8) सोपरा (थाना जिला, महाराष्ट्र)

Scanned by CamScanner

महत्वपूर्ण विदेशी लेखक: (जिनमें इण्डिका का उद्धरण प्राप्त होता है)

स्ट्रैबो: ने भारत का भौगोलिक विवरण अपनी रचना में दिया है, जिसमें चन्द्रगुप्त मौर्य का वर्णन मिलता है।

डियोडोरस: मेगस्थनीज से प्राप्त विवरण के आधार पर सबसे प्रारम्भिक यूनानी विवरण लिखा है।

प्लिनी ज्येष्ठ: "Natural history" में भारत का विवरण दिया।

एरियन: सिकन्दर के अभियान, भारत के भूगोल और सामाजिक जीवन के बारे में विवरण दिया।

प्लूटार्क: सिकन्दर के अभियान, और भारत का सामान्य वर्णन लिखा। चन्द्रगुप्त का उल्लेख "एण्ड्रोकोट्स" के रूप में किया है।

जस्टिन: इसका विवरण "Epitome" (सार संग्रह) में है।

diwakar@specialclasses

रूद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख (150 ई०)

→ इसमें चन्द्रगुप्त मौर्य एवं अशोक दोनों का नामोल्लेख है।

→ इसमें उल्लिखित है कि चन्द्रगुप्त मौर्य ने सौराष्ट्र में सुदर्शन झील का निर्माण कराया तथा अशोक के समय में इसका पुनर्निमाण कराया गया था।

→ रूद्रदामन के समय इस झील के बांध का पुनर्निमाण कराया गया तथा स्कन्दगुप्त के समय में गिरिनार के प्रशासक चक्रपालित ने इस झील के बांध का पुर्नःनिर्माण करवाया।

विशाखदत्त कृत "मुद्राराक्षस"

* इसमें चन्द्रगुप्त के लिए "वृषल" शब्द का उल्लेख है जिसका अर्थ कुछ विद्वान "शूद्र" तथा कुछ "सामाजिक हीनता का द्योतक जैसा मानते हैं।
* मुद्राराक्षस में चन्द्रगुप्त को धननन्द का पौत्र बताया गया है।

बौद्ध ग्रंथ: * "महावंश" के अनुसार कौटिल्य ने धननन्द का नाश करके चन्द्रगुप्त मौर्य को जम्बूद्वीप का शासक बनाया।

* "दिव्यावदान" के अनुसार बिन्दुसार एवं अशोक क्षत्रिय थे अतः चन्द्रगुप्त मौर्य भी क्षत्रिय था।

Scanned by CamScanner

⇒ अर्थशास्त्र में भू-राजस्व की दर 1/6 निर्धारित की गयी है।

मेगस्थनीज की 'इंडिका'

⇒ मेगस्थनीज सेल्यूकस निकेटर का राजदूत था, जो चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में 304 ई०पू० से 299 ई०पू० तक रहा।

⇒ मेगस्थनीज ने चन्द्रगुप्त मौर्य का वर्णन "सैन्ड्रोकोट्टस" के रूप में किया है, जो महिला अंगरक्षकों से घिरा रहता था।

⇒ इण्डिका में वर्णित है कि राजधानी पाटलीपुत्र का प्रशासन 6 समितियों द्वारा किया जाता था। सैन्य प्रशासन भी 6 समितियो द्वारा किया जाता था।

diwakar@specialclasse

⇒ मेगस्थनीज के अनुसार भारत में लेखन कला का अभाव था, जो कि भ्रामक तथ्य है।

⇒ प्लूटार्क ने चन्द्रगुप्त का उल्लेख "एण्ड्रोकोटस" के रूप में किया है।

⇒ शक शासक रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख (150 ई०) में चन्द्रगुप्त मौर्य एवं अशोक दोनों के नामों का उल्लेख है।

⇒ जूनागढ़ अभिलेख के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य ने सौराष्ट्र में सुदर्शन झील का निर्माण करवाया था एवं अशोक के समय में इस झील का पुनर्निर्माण करवाया गया।

⇒ विशाखदत्त द्वारा रचित मुद्राराक्षस में चन्द्रगुप्त मौर्य को "वृषल" बताया जाता है जिसका अर्थ कुछ ~~विद्वान~~ विद्वान "शूद्र" मानते हैं।

⇒ बौद्ध ग्रंथ "दिव्यावदान" के अनुसार चन्द्रगुप्त मौर्य क्षत्रिय था।

⇒ क्षेमेन्द्र कृत "वृहत्कथा मंजरी" में चन्द्रगुप्त मौर्य को नन्दवंश का बताया गया है।

⇒ मेगस्थनीज के अनुसार भू-राजस्व 1/4 भाग था। (भ्रामक तथ्य)

⇒ मेगस्थनीज ने लिखा है कि भारत में अकाल नहीं पड़ते थे। (भ्रामक)

मेगस्थनीज ने सात प्रकार की जातियों का उल्लेख किया है। (भ्रामक)

मेगस्थनीज के अनुसार भारत में दास प्रथा नहीं थी। (भ्रामक तथ्य)

Scanned by CamScanner

मौर्य साम्राज्य

⇒ नन्द वंश के अन्तिम शासक घननन्द को मारकर, चन्द्रगुप्त मौर्य ने मगध पर मौर्य वंश का शासन स्थापित किया।

⇒ यूनानी लेखकों द्वारा वर्णित "सैन्ड्रोकोट्स" की सर "विलियम जोन्स" द्वारा पहचान चन्द्रगुप्त मौर्य के रूप में की गयी।

"अर्थशास्त्र"

⇒ कौटिल्य (विष्णुगुप्त या चाणक्य) द्वारा रचित "अर्थशास्त्र" राजनीति एवं लोक प्रशासन पर लिखी गयी प्रमाणिक किताब है, जिससे मौर्यकाल का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक विवरण मिलता है।

⇒ कौटिल्य को भारत का मैकियावली भी कहा जाता है।

⇒ अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण (भाग) है, यह "अन्य पुरुष शैली" में लिखी गयी पुस्तक है।

diwakar@specialclass

⇒ विशाखदत्त द्वारा रचित संस्कृत नाटक "मुद्राराक्षस" में चाणक्य द्वारा नन्दवंश की सत्ता पलटने का वर्णन है।

⇒ चन्द्रगुप्त ने राज्य का सप्तांग सिद्धान्त दिया जिसके अनुसार राज्य के 7 अंग होते है:- स्वामी (राजा), आमात्य (योग्य अधिकारियों का समूह), जनपद (राज्यक्षेत्र), दुर्ग (किले), कोष (धन), दण्ड (सेना), एवं मित्र।

⇒ कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में राज्य के 18 तीर्थ (अधिकारी) का वर्णन है।

⇒ राज्य के गुप्तचरों को "गूढ़ पुरुष" कहा जाता था।

⇒ "अर्थशास्त्र" में गुप्तचर विभाग का नाम "महामात्यपसर्प" मिलता है।

⇒ "अर्थशास्त्र" एवं स्ट्रेबो के अनुसार महाजनों पर राज्य का नियंत्रण होता था।

⇒ कौटिल्य ने शूद्रों को भी आर्य कहा है, शूद्रों को भी ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्यों के साथ सेना में भर्ती की छूट थी।

⇒ कौटिल्य ने 9 प्रकार के दासों का उल्लेख किया है, अहितक अस्थायी दास थे।

Scanned by CamScanner

स्थानान्तरित की। इसके बाद पाटलिपुत्र ही मगध साम्राज्य की राजधानी रही।

⇒ कालाशोक के शासनकाल में ही वैशाली में द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ।

⇒ कालाशोक की हत्या के बाद, मगध पर नन्द वंश का शासन प्रारम्भ हुआ।

नन्द वंश (344 BC — 324 BC)

महानन्दिन: इस वंश का संस्थापक था, परन्तु इसका वध एक शूद्र दासी के पुत्र महापद्मनन्द (उग्रसेन) ने किया।

diwakar@specialclasses

महापद्मनन्द:

⇒ पुराणों में इसे एकछत्र और एकराट शासक कहा गया।

⇒ यह पूरे मगध साम्राज्य का सबसे शक्तिशाली शासक था।

⇒ इसने पहली बार कलिंग पर विजय प्राप्त की तथा वहाँ एक नहर भी खुदवाई जिसका उल्लेख कलिंग शासक खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख में मिलता है। इसी अभिलेख से पता चलता है कि महापद्मनन्द कलिंग से जिनसेन की जैन प्रतिमा उठा लाया था।

⇒ प्रसिद्ध व्याकरणाचार्य पाणिनी इसके मित्र थे।

⇒ महापद्मनन्द ने 344 BC – 322 BC तक राज्य किया।

घनानन्द:

⇒ यह नंद वंश का अन्तिम शासक था। इसी के शासनकाल में सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया था।

⇒ घनानन्द जैन मत का पोषक था।

⇒ धनानंद के जैन अमात्य शकटाल तथा स्थूलभद्र थे।

⇒ जनता पर अत्यधिक कर लगाने के कारण जनता घनानन्द से अत्यधिक असंतुष्ट थी। इसी का लाभ उठाकर चन्द्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य (विष्णुगुप्त) की मदद से घनानंद को मारकर मौर्य वंश की स्थापना की।

Scanned by CamScanner

अजातशत्रु या कुणिक

⇒ अजातशत्रु ने 492 BC से 460 BC तक मगध पर राज्य किया।

⇒ उसने काशी और वैशाली को अपने राज्य में मिलाकर साम्राज्य का विस्तार किया।

⇒ यह बौद्ध तथा जैन दोनों मतो का पोषक था।

⇒ उसके शासनकाल के आठवें वर्ष में बुद्ध को महापरिनिर्वाण प्राप्त हुआ।

⇒ अजातशत्रु के शासन काल में ही राजगृह की सप्तपर्णी गुफा में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया।

⇒ अजातशत्रु ने भी बौद्ध एवं जैन मतों को संरक्षण प्रदान किया।

⇒ अजातशत्रु की हत्या उसके पुत्र उदायिन ने की थी।

diwakar@specialclasse

उदायिन या उदयभद्र

⇒ उदायिन ने गंगा और सोन नदियों के संगम पर पटना के निकट पाटलिपुत्र (कुसमपुर) की स्थापना की तथा राजधानी राजगृह से पाटलिपुत्र स्थानान्तरित की।

⇒ उदायिन की हत्या एक व्यक्ति ने छूरा घोंपकर कर दी।

⇒ उदायिन ने 460 BC से 444 BC तक राज्य किया।

⇒ उदायिन के तीन पुत्रों अनिरुद्ध, मुंडक और नागदशक ने बारी-बारी से मगध पर शासन किया।

⇒ बाद में जनता ने इन शासको को हटाकर शिशुनाग नामक एक योग्य अमात्य को राजा बनाया।

शिशुनाग वंश (412 BC – 344 BC)

शिशुनाग: इस वंश का संस्थापक था, जिसने 412 BC से 394 BC शासन किया।

→ शिशुनाग ने अपनी राजधानी वैशाली में स्थानान्तरित की।

→ इसकी सबसे बड़ी सफलता अवंति राज्य को जीतकर उसे मगध साम्राज्य में मिलाना था।

कालाशोक या काकवर्ण: इसने पुनः राजधानी वैशाली से पाटलिपुत्र

Scanned by CamScanner

मगध साम्राज्य की स्थापना और विस्तार -

⇒ मगध साम्राज्य के प्राचीन इतिहास की रूपरेखा महाभारत व पुराणों में मिलती है।

⇒ इन ग्रंथों के अनुसार मगध से सबसे प्राचीन राजवंश का संस्थापक **बृहद्रथ** था।

⇒ बृहद्रथ **जरासंध** का पिता वसु का पुत्र था।

⇒ मगध की आरंभिक राजधानी वसुमति या **गिरिव्रज** की स्थापना का श्रेय वसु को ही जाता है।

प्राचीन मगध राजवंश ↓

वसु — प्राचीन मगध राजवंश का संस्थापक; मगध की आरंभिक राजधानी वसुमति का संस्थापक

↓

बृहद्रथ → प्राचीन मगध राजवंश का संस्थापक

↓

जरासंध → भीम के हाथों महाभारत के युद्ध में पराजित

↓

रिपुंजय — अंतिम शासक

diwakar@specialclasses

आधुनिक मगध का उत्कर्ष

हर्यक वंश (पितृहन्ता वंश) 544 BC – 412 BC

⇒ इस वंश का संस्थापक **बिम्बसार** था, जैन साहित्य में इसे **श्रेणिक** या श्रेणिय कहा गया।

⇒ बिम्बसार ने तीन राजवंशों में वैवाहिक संबंध स्थापित कर मगध साम्राज्य को मजबूत किया।

⇒ ये विवाह क्रमशः **लिच्छवी** गणराज्य के शासक चेटक की पुत्री चेलना, कोसल नरेश **प्रसेनजित** की बहन महाकोशला, **मद्र देश** (पंजाब) की राजकुमारी क्षेमा से किये।

⇒ बिम्बसार ने अपने राजवैद्य **जीवक** को अवन्ति नरेश चण्डप्रद्योत का पीलिया (पाण्डु रोग) ठीक करने के लिए भेजा था।

⇒ बिम्बसार बौद्ध तथा जैन दोनों मतों का पोषक था।

⇒ बिम्बसार ने 544 BC से 492 BC तक राज्य किया

⇒ इसकी हत्या इसके पुत्र अजातशत्रु ने की।

Scanned by CamScanner

मगध साम्राज्य का उत्कर्ष

हर्यक वंश (पितृहन्ता वंश)

⇓

(544 BC – 492 BC) बिम्बिसार अथवा श्रेणिय (श्रेणिक) — हर्यक वंश का संस्थापक

↓ पुत्र — राजधानी – गिरिव्रज या राजगृह

(492 BC – 460 BC) अजातशत्रु या कुणिक

↓ पुत्र — राजधानी – गिरिव्रज या राजगृह

(460 BC – 444 BC) उदायिन या उदयभद्र

⇓

शिशुनाग वंश (412 ई.पू. – 344 ई.पू.)

⇓

(412 BC – 394 BC) शिशुनाग — शिशुनाग वंश का संस्थापक

↓ पुत्र

(394 BC – 366 BC) कालाशोक अथवा काकवर्ण

⇓

नन्द वंश (344 ई.पू. से 324 ई.पू.)

⇓

महानन्दिन

↓

(344 BC – 322 BC) महापद्मनन्द

↓ पुत्र

धननन्द

⇓

मौर्य वंश .... [323 BC – 298 BC]

diwakar@specialclasses

Scanned by CamScanner

⇒ मंडल के अन्तर्गत जिलो को "आहार" या "विषय" कहते थे, जिसका शासक "स्थानिक" कहलाता था।

⇒ स्थानिक के अधीन "गोप" 10 गावों का प्रधान होता था।

⇒ ग्राम का प्रमुख अधिकारी "ग्रामणी" कहलाता था।

⇒ नगरका प्रमुख "एस्ट्रोनोमोई" कहलाता था।

⇒ "ऐग्रोनोमोई" जिले एवं सड़क निर्माण का प्रमुख अधिकारी होता था।

⇒ जनपद के प्रमुख अधिकारी को रज्जुक कहते थे।

⇒ मौर्यकाल में गुप्तचरों को "गूढपुरुष" कहते थे, तथा इसके प्रमुख अधिकारी को "सर्पमहामात्य" कहा जाता था।

⇒ 'संस्था' तथा 'संचरा' गुप्तचरों के दो प्रमुख प्रकार थे।

⇒ अपराधों की रोकथाम तथा शान्ति व्यवस्था हेतु पुलिस की तरह 'रक्षिन' होता था।

⇒ कण्टकशोधन (फौजदारी) न्यायालय के न्यायधीश को "प्रदेष्टा" कहते थे।

diwakar@specialclasses

⇒ जनपद का मुख्य न्यायधीश एवं अधिकारी रज्जुक तथा नगर का न्यायधीश/अधिकारी "व्यवहारिक" होता था।

⇒ मौर्यों की राजकीय मुद्रा "पण" थी (3/4 तोले के बराबर चांदी का सिक्का)। इसे आहत सिक्का भी कहते थे, क्योंकि इस पर सूर्य, चन्द्र, पीपल, मयूर, बैल, सर्प आदि खुदे होते थे।

* सिक्केकी धातु — नाम

स्वर्ण →	निष्क, सुवर्ण
चांदी →	पण, रूप्यरूप, कार्षापण, धरण, शतमान
तांबा →	माषक, काकणी

Scanned by CamScanner

मौर्यकाल के अन्य महत्वपूर्ण तथ्य:

⇒ मौर्यकाल में भारत की "प्रथम केन्द्रीकृत प्रशासन प्रणाली" का उल्लेख मिलता है।

⇒ राजस्व विभाग का प्रधान अधिकारी "समाहर्ता" कहलाता था।

⇒ राजकीय कोषाध्यक्ष "सन्निधाता" होता था।

⇒ "कर्मान्तिक" देश के उद्योग-धन्धों का प्रधान निरीक्षक होता था।

⇒ "व्यवहारिक" दीवानी (धर्मस्थीय) न्यायालय का प्रधान न्यायाधीश होता था।

⇒ वन विभाग का प्रधान अधिकारी "आटविक" कहलाता था।

⇒ अर्थशास्त्र में कुल 18 तीर्थों (राज्य के अधिकारी) का वर्णन मिलता है।

⇒ 'अर्थशास्त्र' में विभिन्न विभागों के 26 अध्यक्षों का उल्लेख है।

अध्यक्ष	विभाग
पण्याध्यक्ष →	वाणिज्य विभाग
सूनाध्यक्ष →	बूचड़खाना
सीताध्यक्ष →	राजकीय कृषि विभाग
आकाराध्यक्ष →	खान विभाग
कुप्याध्यक्ष →	वन विभाग
विविताध्यक्ष →	चारागाहों का प्रमुख
नवाध्यक्ष →	जहाजरानी विभाग
पौतवाध्यक्ष →	माप-तौल विभाग
मानाध्यक्ष →	दूरी और समय सम्बन्धित साधनों का नियंत्रण

diwakar@specialclasses

⇒ अध्यक्षों को 1000 पण वार्षिक वेतन मिलता था।

⇒ प्रान्तीय शासन के प्रमुख 'कुमार' या 'आर्यपुत्र' कहलाते थे।

⇒ अशोक का साम्राज्य 5 प्रमुख प्रान्तों में विभक्त था।

⇒ मौर्य साम्राज्य में प्रान्तों को 'चक्र' कहते थे।

⇒ प्रान्तों के अधीन मण्डलों का प्रशासन "अमात्यों" द्वारा देखा जाता था। इन्हें 'प्रादेशिक' या 'प्रदेष्टा' भी कहते थे।

Scanned by CamScanner

⇒ अशोक की पत्नी का नाम – असंधिमित्रा, महादेवी, पद्मावती, तिष्यरक्षिता (बौद्ध ग्रंथों में), एवं कारुवाकी (अशोक के प्रयाग स्तम्भ अभिलेख में)

⇒ अशोक की दो पुत्रियाँ संघमित्रा तथा चारुमती (बौद्ध ग्रंथों के अनुसार) थी। अशोक के दो पुत्र कुणाल एवं महेन्द्र का उल्लेख बौद्ध ग्रंथों में है। तीसरे - पुत्र जालौक का उल्लेख राजतरंगिणी में है।

⇒ प्रयाग स्तम्भ अभिलेख में एक अन्य पुत्र 'तीवर' का नामोल्लेख है। अशोक ने 273 BC में राज्य का नियंत्रण प्राप्त किया और 4 वर्ष बाद 269 BC में उसका राज्याभिषेक हुआ।

⇒ राज्याभिषेक के 9वें वर्ष (261 BC) में अशोक ने कलिंग पर विजय प्राप्त की जिसका वर्णन उसके 13वें शिलालेख में है।

⇒ कलिंग विजय के रक्तपात से विचलित होकर अशोक ने धम्म विजय की नीति अपनाई और युद्ध का मार्ग छोड़ दिया।

⇒ अशोक ने कश्मीर में "श्रीनगर" तथा नेपाल में "देवपत्तन" नामक नगर बसाये। (स्रोत– राजतरंगिणी)

⇒ अशोक के समय में मौर्य साम्राज्य का क्षेत्रफल सर्वाधिक था।

⇒ अशोक पहले ब्राह्मण धर्म/शैव धर्म का अनुयायी था।

⇒ उपगुप्त ने अशोक को बौद्ध धर्म की दीक्षा दी।

⇒ राज्याभिषेक के 10वें वर्ष वह बौद्ध उपासक के रूप में बोधगया, तथा 12 वें वर्ष निगालि सागर एवं 20वें वर्ष लुम्बिनी गया।

⇒ अशोक की मृत्यु 232 BC में हुयी. उसके उत्तराधिकारियों में कुणाल, सम्प्रति, दशरथ तथा वृहद्रथ के उल्लेख मिलते है।

⇒ वृहद्रथ मौर्य वंश का अन्तिम शासक था।

⇒ वृहद्रथ की हत्या उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने 185 BC में करके एक नये वंश "शुंग वंश" के शासन की नींव डाली।

diwakar@specialclasses

Scanned by CamScanner

में भेजा।

⇒ प्लूटार्क के अनुसार चन्द्रगुप्त ने 6 लाख की सेना लेकर सम्पूर्ण भारत को रौंद डाला तथा हिन्दूकुश पर्वत (पश्चिम) से पूर्व में बंगाल एवं कश्मीर (उत्तर) से लेकर मैसूर (दक्षिण) तक अपने साम्राज्य का विस्तार किया।

⇒ शासन के अन्तिम वर्षों में वह चन्द्रगिरी पर्वत (कर्नाटक) चला गया और संलेखना पद्धति (जैन धर्म) से तपस्या करके अपने प्राण त्यागे।

diwakar@specialclasses

बिन्दुसार (298 BC – 273 BC)

⇒ बिन्दुसार के अन्य नाम "अमित्रचेटस", "अमित्रघात" एवं "सिंहसेन" भी हैं।

⇒ इसके शासन में तक्षशिला के अमात्यों के विद्रोह को कुचलने हेतु मालवा/उज्जैन के प्रशासक "अशोक" को भेजा गया था।

⇒ सीरीया के शासक एण्टियोकस प्रथम ने "डाइमेकस" नामक राजदूत को बिन्दुसार के दरबार में भेजा था।

⇒ बिन्दुसार ने एण्टियोकस से अंगूरी मदिरा, अंजीर और दार्शनिक भेजने का आग्रह पत्र लिखकर किया था।

⇒ मिस्र के शासक टालमी फिलाडेल्फस-II ने "डायनोसिस" नामक राजदूत बिन्दुसार के दरबार में भेजा था।

अशोक (273 BC – 232 BC)

* अशोक के विभिन्न नाम – देवानांपिय, प्रियदर्शी, "बुद्ध शाक्य"
  - देवानांपिय ↓ (अशोक के अभिलेखों में)
  - प्रियदर्शी ↓ (भाबू अभिलेख में)
  - "बुद्ध शाक्य" ↓ (मस्की अभिलेख)

* "अशोक" (मस्की, गुर्जरा, नेत्तूर एवं उडेगोलम, और रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख में)

⇒ अशोक की माता का नाम – धम्मा (महाबोधिवंश में), पासादिका (दिव्यावदान में), सुभद्रांगी (अशोक अवदान माला एवं स्मिथ के ग्रंथ ASHOKA में)

Scanned by CamScanner

चन्द्रगुप्त मौर्य (322 BC – 298 BC)

⇒ मौर्य वंश का संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य था।

⇒ ब्राह्मण ग्रन्थ, मुद्राराक्षस, श्रीधर स्वामी (विष्णु पुराण के टीकाकार), ढुंढिराज (मुद्राराक्षस के टीकाकार) आदि ने चन्द्रगुप्त मौर्य की जाति शूद्र बताई है।

⇒ जस्टिन द्वारा चन्द्रगुप्त मौर्य को निम्न कुल का बताया गया है।

⇒ स्पूनर द्वारा इसे 'पारसीक' बताया गया है।

⇒ जैन एवं बौद्ध ग्रंथ इसे क्षत्रिय सिद्ध करते हैं।

⇒ चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्यारोहण की प्रमाणिक तिथि 322 ई०पू० है।

चन्द्रगुप्त मौर्य के नाम	प्रयोगकर्ता / स्रोत
सैन्ड्रोक्ट्स	स्ट्रेबो, एरियन, जस्टिन
एन्ड्रोकोटस	एप्पियानस, प्लूटार्क
सैन्ड्रोकोप्टस	नियार्कस

⇒ चन्द्रगुप्त मौर्य के गुरु चाणक्य (कौटिल्य / विष्णुगुप्त) था, जिसने अपनी कूटनीति से घननन्द को चन्द्रगुप्त मौर्य के हाथों पराजित कराकर, चन्द्रगुप्त मौर्य को मगध साम्राज्य का शासक बनवाया।

⇒ चन्द्रगुप्त मौर्य ने सर्वप्रथम पंजाब और सिन्ध क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की, तत्पश्चात नन्दों के सेनापति भद्रदसाल को पराजित कर मगध पर अधिकार कर लिया।

⇒ बेबीलोन के राजा सेल्यूकस द्वारा 305–04 BC में काबुल मार्ग से भारत पर आक्रमण किया, परन्तु चन्द्रगुप्त मौर्य ने उसे हराकर 303 BC में सन्धि की।

⇒ चन्द्रगुप्त मौर्य और सेल्यूकस के बीच हुयी सन्धि के अनुसार सेल्यूकस ने अपनी पुत्री 'हेलेना' का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य से की तथा दहेज में चार राज्य – ① एरिया (हेरात), ② अराकोशिया (कंधार), ③ जेड्रोशिया (मकरान तट) तथा पेरोपेनिषदाई (काबुल) दिये और और अपने राजदूत मेगस्थनीज को चन्द्रगुप्त के दरबार

Scanned by CamScanner

⇒ कनिष्क की प्रारम्भिक राजधानी पुरुषपुर (पेशावर) और द्वितीय राजधानी मथुरा थी। (78)

diwakar@specialclasses

⇒ कनिष्क का युद्ध चीन के शासक "पान - चाओ" से हुआ, जिसमें पहले पराजित होने के बाद, अन्ततः कनिष्क विजयी हुआ।

⇒ कनिष्क के कार्यकाल में कुण्डलवन (कश्मीर) में वसुमित्र की अध्यक्षता में चतुर्थ बौद्ध संगीति हुयी थी।

⇒ कनिष्क के दरबार में पार्श्व, वसुमित्र, अश्वघोष आदि बौद्ध दार्शनिक, नागार्जुन (विद्वान), चरक (चिकित्सक) विद्यमान थे।

⇒ कनिष्क के काल में भारत में दो नवीन कला शैलियों (गान्धार एवं मथुरा कला) का अभ्युदय हुआ।

⇒ कनिष्क ने कश्मीर में कनिष्कपुर तथा तक्षशिला के सिरकप में नये नगरों का निर्माण कराया गया।

⇒ कनिष्क ने चीनसेरोम जाने वाले "सिल्क मार्ग" पर अपना नियंत्रण स्थापित किया।

⇒ कुषाणों ने ही सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के (124 ग्रेन के) चलवाये।

⇒ कुषाणों को ही सर्वाधिक तांबे के सिक्के चलवाने का श्रेय प्राप्त है।

⇒ कनिष्क के बाद उसके पुत्र वासिष्क ने 102 – 106 ई० तक राज्य किया।

⇒ वासिष्क के बाद हुविष्क (106 – 140 ई०) ने शासन किया, और कश्मीर में हुष्कपुर नामक नगर की स्थापना करवाई।

⇒ कनिष्क वंश का अन्तिम महान शासक वासुदेव था, जो विष्णु एवं शिव का उपासक था। इसी के काल में कनिष्क साम्राज्य का पतन प्रारंभ हो गया था।

⇒ कुषाणों ने केवल सोने एवं तांबे के ही सिक्के चलवाये थे, और कभी भी चांदी के सिक्के नहीं चलवाये।

Scanned by CamScanner

पार्थियाई या पह्लव शासक

⇒ पार्थियाई मध्य एशिया से भारत आये थे।

⇒ भारत में पार्थियन साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक "मिथ्रेडेट्स प्रथम" (171-130 BC) था।

⇒ पार्थियाई वंश का सबसे प्रसिद्ध शासक "गोण्डोफर्नीज" था। (20-41 AD)

⇒ इस वंश की राजधानी तक्षशिला थी।

⇒ गोण्डोफर्नीज के काल में ही इसाई पादरी "सेंथ थामस" भारत में इसाई धर्म के प्रचार के लिए आया था, जिसकी बाद में हत्या कर दी गयी थी।

⇒ गोण्डोफर्नीज के शासनकाल का खरोष्ठी लिपि का अभिलेख तख्तेबही (पेशावर में स्थित) से प्राप्त हुआ था।

⇒ इस वंश का अंत कुषाणों द्वारा किया गया।

diwakar@specialclasses

कुषाण वंश

⇒ कुषाण मूलतः 'पश्चिमी चीन' के यूची जाति के थे।

⇒ भारत में सर्वप्रथम कुजुल कडफिसेस ने आक्रमण किया तथा पश्चिमोत्तर प्रदेश पर अधिकार किया।

⇒ इसने केवल तांबे के सिक्के चलवाये।

⇒ कुजुल कडफिसेस के बाद विम कडफिसेस गद्दी पर बैठा, इसने तक्षशिला और पंजाब पर अधिकार कर लिया।

⇒ विम कडफिसेस को भारत में कुषाण शक्ति का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।

⇒ इसने सोने तथा तांबे के सिक्के चलवाये, जिसमें एक ओर यूनानी तथा दूसरी ओर खरोष्ठी लिपि अंकित है।

⇒ इन सिक्कों पर शिव की आकृति, नन्दी बैल, त्रिशूल आदि अंकित है, जिससे ज्ञात होता है कि वह शैव धर्म में आस्था रखता था।

कनिष्क (78-105 AD)

* कनिष्क के राज्याभिषेक की तिथि 78 ई० से भारत में शक सम्वत प्रारंभ हुआ।

Scanned by CamScanner

शक आक्रमण

* यूनानियों के बाद मध्य एशिया पर शकों का आक्रमण हुआ।
* शकों ने हिन्द-यवन शासकों से अधिक भू-भाग पर कब्जा किया।

⇒ भारत में शक मुख्यतः दो शाखाओं में विभाजित थे।

तक्षशिला के शक
- प्रथम शासक – मोउस (20BC–22AD)
- अन्य शासक – एजेज, एजेलिसेज

मथुरा के शक
- प्रथम शासक – राजुल /राजउल
- अन्य – शोडास

diwakar@specialclasses

⇒ 57 ई०पू० में विक्रमादित्य ने शकों को पराजित किया। शक विजय के उपलक्ष्य में एक नवीन संवत "विक्रम संवत" (मालव संवत) का प्रारम्भ हुआ।

⇒ नासिक की शक शाखा में दो प्रसिद्ध क्षत्रप भूमक और नहपान थे।

⇒ इसमें सबसे प्रसिद्ध शक शासक नहपान था (119 AD– 124 AD)

⇒ सातवाहन शासक गौतमीपुत्र शातकर्णी ने नहपान को पराजित कर मार दिया।

⇒ मालवा या उज्जैन के शकों में सबसे प्रसिद्ध शासक "रुद्रदामन" था।

⇒ रुद्रदामन (130 – 150 AD) के विषय में जानकारी का सबसे प्रमुख स्रोत जूनागढ़ अभिलेख है।

⇒ जूनागढ़ अभिलेख से पता चलता है कि रुद्रदामन के समय में उसके राज्यपाल विशाख द्वारा सुदर्शन झील के बांध का पुर्ननिर्माण कराया गया था।

⇒ मालवा के शकों में अन्तिम शक शासक रुद्रसिंह "तृतीय" था।

⇒ चन्द्रगुप्त "विक्रमादित्य" द्वारा रुद्रसिंह तृतीय को मारकर पहली बार मालवा क्षेत्र में "व्याघ्र शैली में चांदी के सिक्के" चलवाये गये थे।

Scanned by CamScanner

मौर्योत्तर काल

हिन्द यवन < शक < पार्थियाई (पह्लव) < कुषाण

हिन्द यवन (Indo - Greek)

* मौर्योत्तर काल की सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक घटना बैक्ट्रिया (अफगानिस्तान) के यवनों द्वारा भारत पर आक्रमण करना था।
* सबसे पहला यवन आक्रमणकारी "डेमेट्रियस प्रथम" (220-175 BC) था, जिसने 183 BC के लगभग पंजाब का एक बड़ा भाग जीतकर साकल को अपनी राजधानी बनाया।

⇒ डेमेट्रियस ने यूनानी तथा खरोष्ठी लिपियों वाले सिक्के चलवाये।

⇒ इसी समय बैक्ट्रिया में यूक्रेटाइडस के नेतृत्व में विद्रोह हुआ और डेमेट्रियस को पराजित होकर बैक्ट्रिया से अधिकार छोड़ना पड़ा।

⇒ यूक्रेटाइडस ने भी भारत पर आक्रमण किया और भारत के कुछ भागों को जीतकर उसने तक्षशिला में अपनी राजधानी बनाई।

भारत में यवन साम्राज्य

डेमेट्रियस वंश

* राजधानी - साकल (श्यालकोट)
* इस वंश का सबसे प्रतापी शासक मिनाण्डर (मिलिन्द) था।
* बौद्ध ग्रंथ "मिलिन्दपान्हो" में मिनान्डर और बौद्ध भिक्षु नागसेन के साथ वाद-विवाद का वर्णन है,
* जिसके पश्चात् वो बौद्ध भिक्षु बन गया था।

यूक्रेटाइडस वंश

* राजधानी तक्षशिला
* सबसे प्रतापी शासक - एण्टियालकीस
* एण्टियालकीस ने शुंग वंश के शासक भागभद्र के दरबार में हेलियोडोरस नामक राजदूत भेजा था।
* हेलियोडोरस ने विदिशा में एक गरुड़ स्तम्भ स्थापित किया।

⇒ इन्डो-ग्रीक शासकों ने सोने, तांबे एवं चांदी के सिक्के चलवाये। इनके स्वर्ण सिक्के 'स्टेटर' कहे जाते थे।

diwakar@specialclasses

Scanned by CamScanner

आभीर वंश

संस्थापक ⇒ ईश्वरसेन
इसने 248-49 ई० में कल्चुरि-चेदि संवत की स्थापना की।

इक्ष्वाकु वंश

वीरपुरुषदत्त ने नागार्जुनीकोण्डा के प्रसिद्ध स्तूप का निर्माण कराया। इक्ष्वाकु लोग बौद्धमत के पोषक थे।

कृष्णा-गुण्टूर क्षेत्र के शासक।
पुराणों में इन्हें आंध्रभृत्य कहा गया है।
संस्थापक - श्री शान्तमूल (अश्वमेध यज्ञ किया

चुटुशातकर्णी वंश

महाराष्ट्र तथा कुन्तल प्रदेश पर शासन।
इनके शासन का अंत कदम्बों ने किया।

कलिंग का चेदि वंश

हाथीगुम्फा अभिलेख के अनुसार खारवेल ने चोल, चेर, एवं पाण्ड्यों को हराया था।
↓
"त्रिकोणीय संघर्ष"

संस्थापक - महामेघवाहन।
खारवेल इस वंश का सबसे महान शासक था, जिससे हाथी गुम्फा अभिलेख से जानकारी मिलती है।

diwakar@specialclasses

वाकाटक वंश

⇒ यह एक ब्राह्मण वंश था।
संस्थापक - विन्ध्य शक्ति (255-275 ई०)
राजधानी - नन्दिवर्धन (नागपुर)

* प्रवरसेन प्रथम (275-335 ई०) ने चार अश्वमेध यज्ञ किये थे।
* रूद्रसेन द्वितीय (385-390 ई०) ने सेतु बन्ध नामक पुस्तक की प्राकृत भाषा में रचना की थी।
* अजन्ता की गुफा संख्या 9 एवं 10 वाकाटक काल से ही सम्बन्धित है।

Scanned by CamScanner

कण्व वंश (75–30 BC)

⇒ अन्तिम शुंग शासक देवभूति की हत्या उसके मंत्री वसुदेव ने करके कण्व वंश की स्थापना की।

⇒ यह भी ब्राह्मण राजवंश था।

⇒ इसके चार शासक वसुदेव → भूमिमित्र → नारायण → सुशर्मन थे।

⇒ अन्तिम शासक सुशर्मन की हत्या 30 ई०पू० में सिमुक ने कर दी और एक नये ब्राह्मण वंश - आंध्र सातवाहन वंश की स्थापना की।

diwakar@specialclasses

आंध्र सातवाहन वंश: (30 BC – 250 AD)

सिक्के – अधिकांशतः शीशे के। पोटीन, तांबे एवं कांसे के भी

* संस्थापक – सिमुक

* राजधानी – प्रतिष्ठान (महाराष्ट्र)

⇒ पुराणों में इसे 'आंध्र', 'आन्ध्र जातीय', तथा 'आन्ध्र भृत्य' कहा गया है।

⇒ इस वंश का इतिहास "मत्स्य" तथा "वायु पुराण" में वर्णित है।

⇒ सातवाहन वंश के शासकों को दक्षिणाधिपति एवं इनके द्वारा शासित क्षेत्र को दक्षिणापथ कहा जाता था।

शातकर्णी प्रथम → दो अश्वमेध एवं एक राजसूय यज्ञ किये। इसकी रानी नागानिका के नानाघाट अभिलेख में ब्राह्मणों एवं बौद्धों को भूदान का वर्णन मिलता है।

शातकर्णी प्रथम ने मालव शैली की गोल मुद्राएं तथा अपनी पत्नी के नाम पर चांदी की मुद्रायें चलायी।

↓

हाल → ने प्राकृत भाषा में 'गाथा सप्तशती' की रचना की।

इसके काल में ही गुणाढ्य ने "वृहत्कथा कोश" तथा संस्कृत व्याकरण के लेखक सर्ववर्मन ने "कातन्त्र" नामक पुस्तक संस्कृत में लिखी।

↓

गौतमीपुत्र शातकर्णी (106–130 AD) – 23वां, सबसे महान शासक था।

इसकी मां बालश्री के नासिक अभिलेख में इसे एकमात्र तथा अद्वितीय ब्राह्मण बताया गया है।

इसने शक शासक नहपान को हराकर उसकी हत्या कर दी थी।

इसने 'वेणकटकस्वामी', राजाराज तथा विंध्य-नरेश की उपाधि धारण की।

↓

वाशिष्ठीपुत्र पुलुमावी (130–154 AD) आन्ध्र प्रदेश पर विजय प्राप्त करने के कारण इसे प्रथम आंध्र सम्राट भी कहा गया।

पुलुमावी ने अपनी राजधानी आंध्र के औरंगाबाद जिले के गोदावरी तट पर पैठन (प्रतिष्ठान) में बनवायी।

↓

शिव श्री शातकर्णी (154–165 AD) → यह पुलुमावी का भाई तथा रुद्रदामन का दामाद था।

↓

यज्ञ श्री शातकर्णी (165–194 AD)

इसके सिक्कों पर जलयान का चित्र अंकित है।

Scanned by CamScanner

मौर्योत्तर कालीन भारतीय राजवंश

* शुंग वंश → कण्व वंश → आंध्र सातवाहन वंश → आभीर वंश → इक्ष्वाकु वंश → चुटुशातकर्णी वंश → कलिंग का चेदि वंश → वाकाटक वंश

शुंग वंश (187 – 75 ई०पू०)

* अन्तिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ की सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने की, और शुंग वंश की स्थापना की।

⇒ इसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी।

⇒ अयोध्या अभिलेख के अनुसार पुष्यमित्र शुंग ने दो अश्वमेध यज्ञ महर्षि पतंजलि के द्वारा सम्पादित करवाये।

⇒ पुष्यमित्र ने सांची (रायसेन जिला, म०प्र०) में दो बौद्ध स्तूपों का निर्माण कराया, तथा अशोक द्वारा सांची में स्थापित महास्तूप की वेदिका, के स्थान पर पाषाण वेदिका निर्मित कराया।

⇒ पुष्यमित्र शुंग ने "भरहुत स्तूप (सतना, म०प्र०) का निर्माण कराया, जिसकी खोज 1813 ई० में अलेक्जेन्डर कनिंघम द्वारा की गयी।

पुष्यमित्र शुंग (185 – 149 BC)
↓
अग्निमित्र
↓
वसुमित्र
↓
वज्रमित्र
↓
भागभद्र
↓
देवभूति

अग्निमित्र, वसुमित्र → मालविकाग्निमित्र नाटक के अनुसार इसके समय यवन आक्रमण हुआ था, वसुमित्र ने यवनों को सिन्धु तट पर हरा दिया था।

भागभद्र → के विदिशा स्थित दरबार में हिन्द-यवन शासक एण्टियालकीडस ने ने "हेलियोडोरस" नामक राजदूत भेजा था।

देवभूति → यह शुंग वंश का अन्तिम शासक था, इसके मंत्री वसुदेव ने इसकी हत्या करके कण्व वंश की स्थापना की।

Scanned by CamScanner